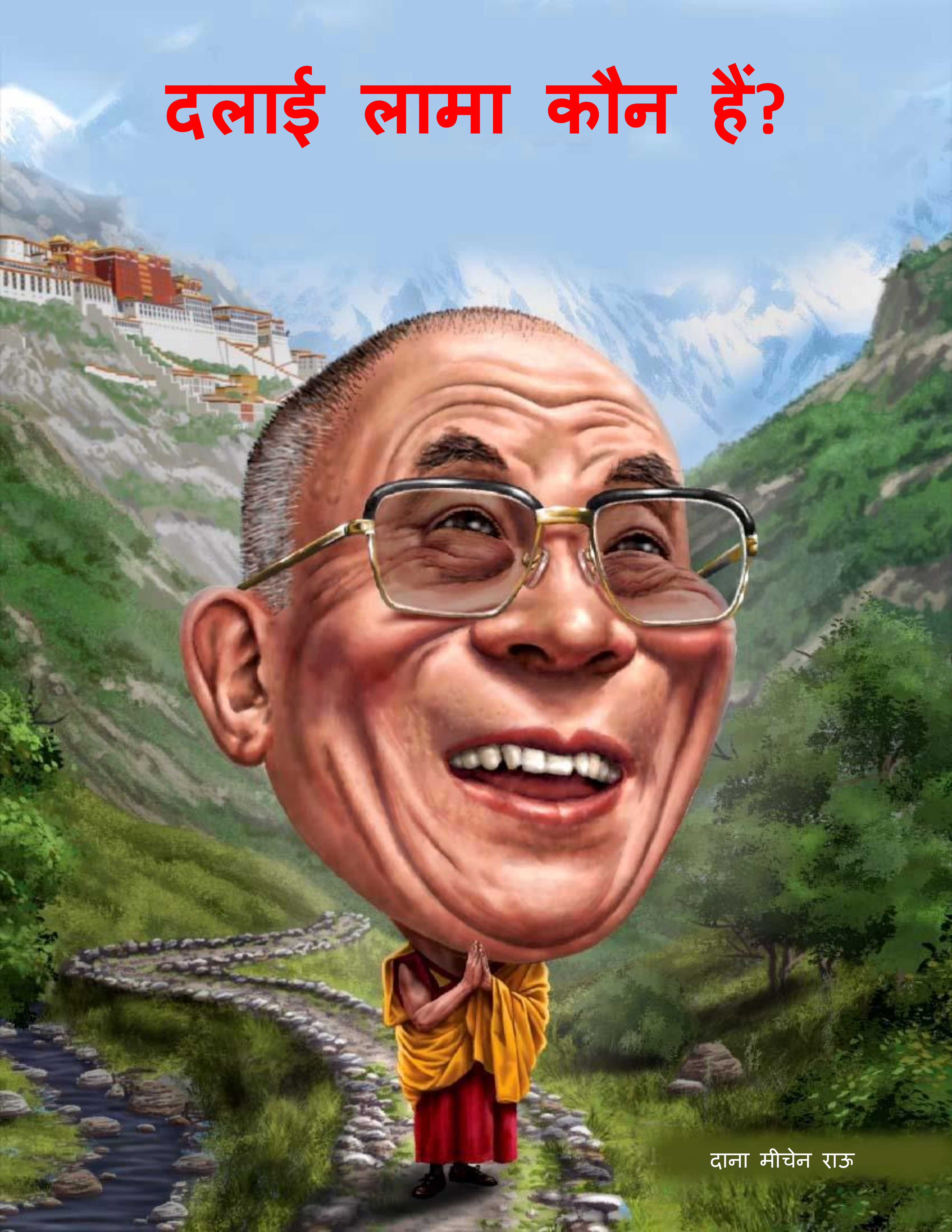
दलाई लामा कौन हैं?



दाना मीचेन राऊ

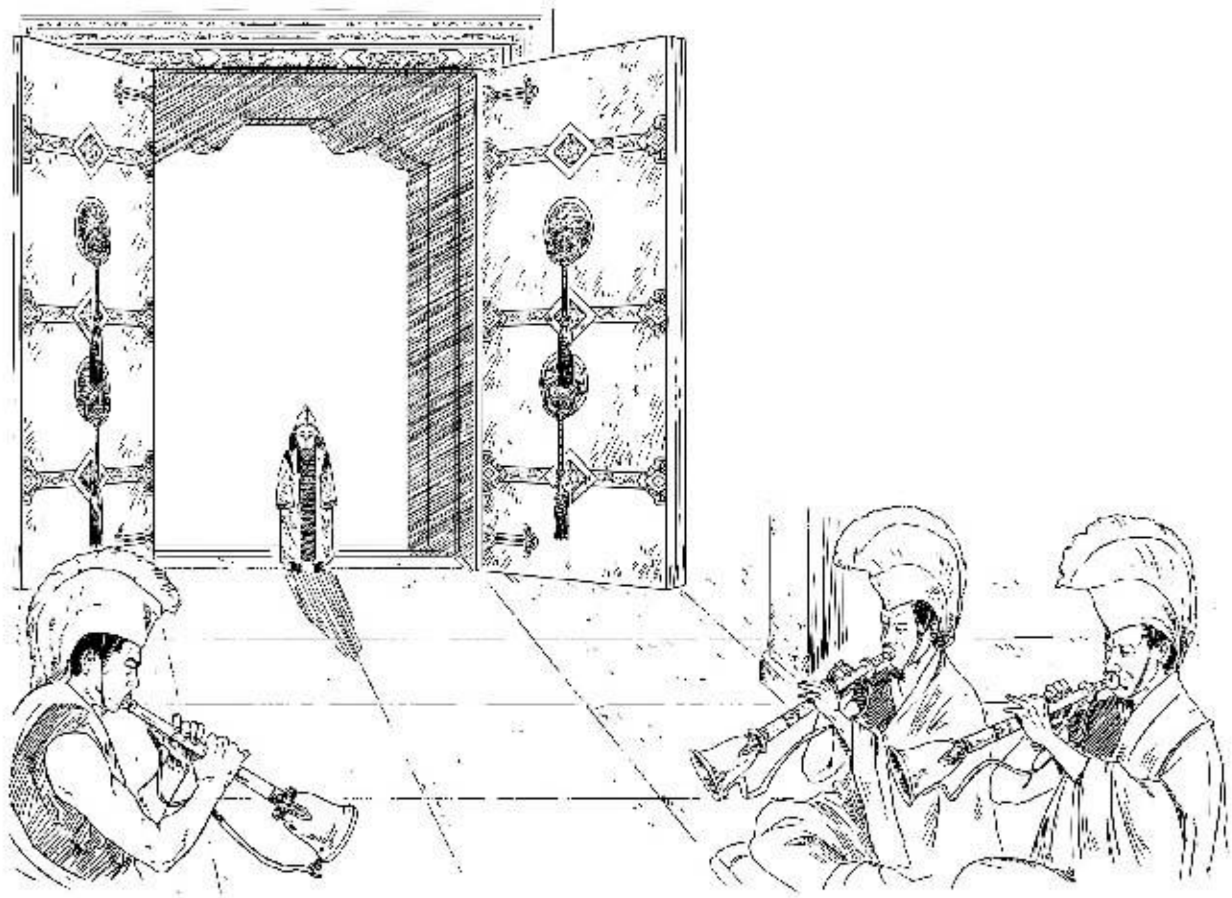
दलाई लामा कौन हैं?



दाना मीचेन राऊ

चित्र: डेड पुत्रा

विषयवस्तु



दलाई लामा कौन हैं?

22 फरवरी, 1940, पोटाला - तिब्बत के पहाड़ों में एक भव्य, हजार कमरों वाले महल में एक व्यस्त दिन था. सुबह-सुबह, मुख्य सभा भवन में मेहमान आने लगे थे. वे अपने नेता के आने का इंतजार कर रहे थे.

हॉल भर जाने के बाद भीड़ शांत हो गई. फिर सुनहरे वस्त्र पहने एक छोटे लड़के ने प्रवेश किया. हॉर्न और तुरही के संगीत ने उसका स्वागत किया. उसने एक सफेद कालीन बिछे कमरे को पार किया जो विशेष रूप से उसके रत्न जड़ित सिंहासन के लिए बिछाया गया था. ऊंची, गद्दीदार कुर्सी के लकड़ी के आधार पर आठ शेर उकेरे जाने के कारण उसे शेर-सिंहासन कहा जाता था. वो सिंहासन दलाई लामा की गद्दी थी. "दलाई लामा" तिब्बत देश के राजनीतिक और धार्मिक नेता को दिया गया नाम था.

युवा दलाई लामा को अपने सिंहासन पर चढ़ने के लिए कुछ मदद की जरूरत पड़ी. फिर वो आसन पर आलथी-पालथी मारकर बैठ गए और समारोहों, नृत्यों और वाचनों को देखते रहे. लड़के को कई उपहार दिए गए — एक संगीत बक्सा, एक हाथी का दाँत, महंगे कपड़े, तोते, एक तिपहिया साइकिल और यहाँ तक कि सोने की एक ईंट! साधु-संत, सरकारी अधिकारी, और उपस्थित अन्य लोग, उनके सम्मान में, इतना नीचे झुके कि वे फर्श पर लेट गए. "मुझे वो मज़ेदार लगा," उन्होंने बाद में कहा. दलाई लामा अपने मज़ाक़िआ अंदाज़ के लिए जाने जाते हैं. लेकिन वयस्कों का इस तरह का व्यव्हार उनके लिए विशेष रूप से मज़ेदार था. क्योंकि वो तब केवल चार साल के थे!

जैसे-जैसे वो बड़े हुए तब शेर के सिंहासन पर बैठे उस युवा लड़के को समझ में आने लगा कि वो दिन इतना खास क्यों था. तिब्बत के चौदहवें दलाई लामा के रूप में, उन्होंने खुशियों और कठिनाइयों दोनों का सामना किया. उन्होंने अपने ज्ञान में वृद्धि की. और वो अपने लोगों की देखभाल करने के लिए और मजबूत बने.



लेकिन अपने राज्याभिषेक के दिन, उन्हें यह पता नहीं था कि उनके लिए और तिब्बत के लोगों का, आगे भविष्य क्या था. छोटे लड़के को मिले ढेरों उपहारों के साथ-साथ उसे अपने हाथों में एक साहसिक भविष्य भी मिला था.

अध्याय 1

छोटा ल्हामो

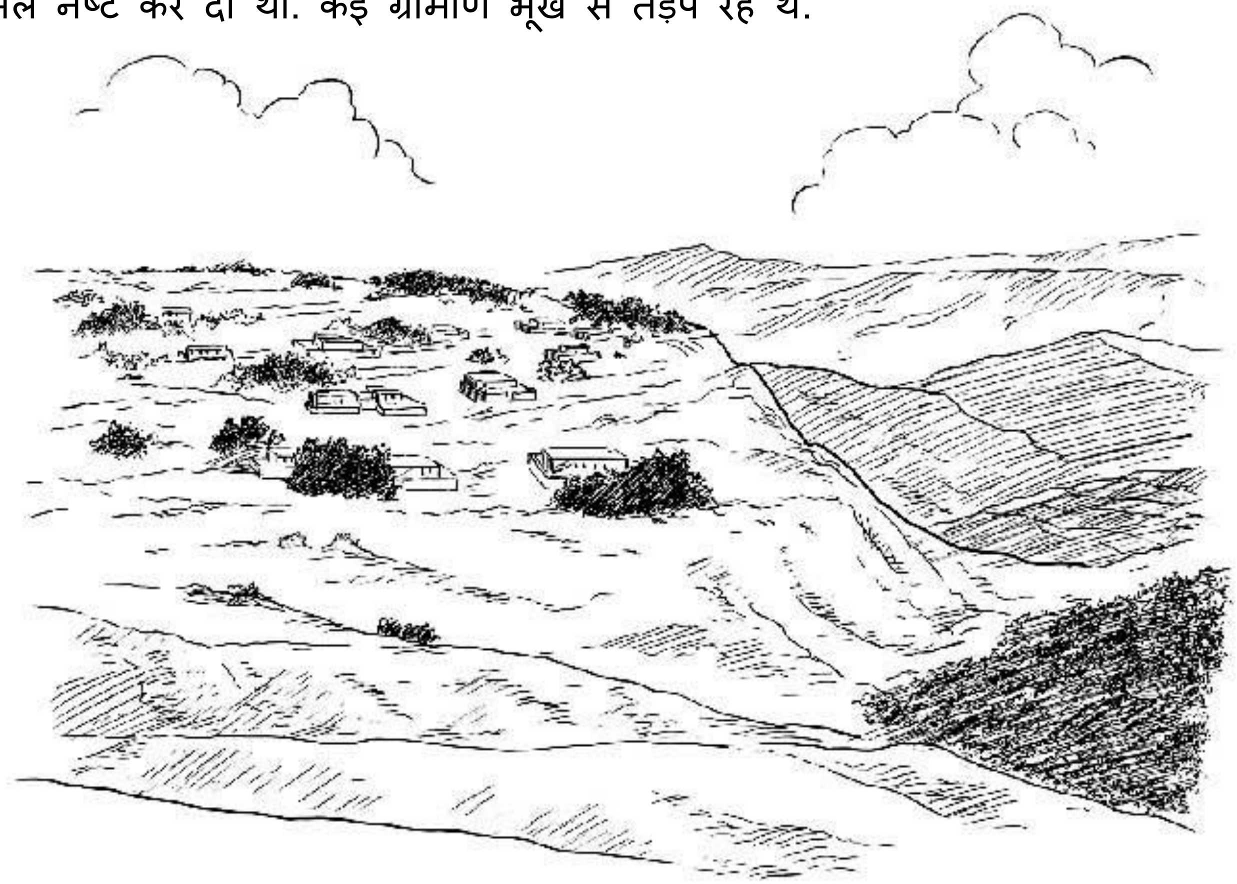


डिकी त्सेरिंग 6 जुलाई, 1935 को बहुत जल्दी जाग गईं. वो तिब्बत के तख्तसेर में अपने मिट्टी और पत्थर के घर के पीछे खलिहान में चली गईं. वहाँ, जानवरों के बीच, उन्होंने अपने बेटे ल्हामो को जन्म दिया. बच्चा रोया नहीं. उसकी आँखें खुली हुई थीं. ल्हामो की मां, डिकी, और पिता, चोएक्योंग त्सेरिंग के, पहले से ही चार बच्चे थे - बेटी, डोल्मा, और तीन बेटे जिनका नाम नोरबू, ग्यालो और लोबसांग थे. उनके छह कमरों के घर में ज्यादा फर्नीचर नहीं था. बच्चों के पास अपने बिस्तर नहीं थे. परिवार खासकर ठंडी तिब्बती सर्दियों में, आग से गर्म रहने के लिए रसोईघर में ही इकट्ठा होता था



वे सभी तिब्बती बौद्ध धर्म का अभ्यास करते थे. वो एक ऐसा धर्म था जो उनके लिए और सभी तिब्बतियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था. इसलिए उनके घर में एक प्रार्थना कक्ष भी था, जहाँ एक छोटी वेदी पर परिवार, भोजन और फूलों का प्रसाद छोड़ता था.

अमदो के उत्तर-पूर्वी प्रांत में एक छोटा सा गाँव, तख्तसेर, एक विस्तृत घाटी के पास, एक पहाड़ी पर स्थित था. वहां की जमीन और मौसम खेती के लिए अच्छे नहीं थे, लेकिन वहां के परिवार फिर भी फसल उगाने की पूरी कोशिश करते थे. उनका परिवार जौ (एक प्रकार का अनाज) और आलू उगाता था. ल्हामो के जन्म से पहले, गांव लंबे समय तक सूखे से पीड़ित था. कई सालों से वर्षा नहीं हुई और ओलों ने खेतों में लगी फसल नष्ट कर दी थी. कई ग्रामीण भूख से तड़प रहे थे.



बुद्ध धर्म

बौद्ध धर्म, सिद्धार्थ गौतम द्वारा स्थापित धर्म था. राजकुमार गौतम, उत्तरी भारत में ईसा पूर्व छठी और चौथी शताब्दी के बीच रहे थे. उन्हें आज भी बुद्ध के नाम से जाना जाता है.

बुद्ध ने आत्मज्ञान, या निर्वाण की खोज के लिए अपना शाही जीवन त्याग दिया था. आत्मज्ञान से पूर्ण सुख और आनंद मिलता था और दुखों का अंत होता था. बुद्ध ने दूसरों को सिखाया कि वो अपने भीतर इस शांति को कैसे पाएं. बुद्ध की मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों ने उनके पाठों का अभ्यास करना जारी रखा. धीरे-धीरे बौद्ध धर्म एक प्रमुख धर्म बन गया जो सातवीं शताब्दी ईस्वी तक, तिब्बत में फैल गया.

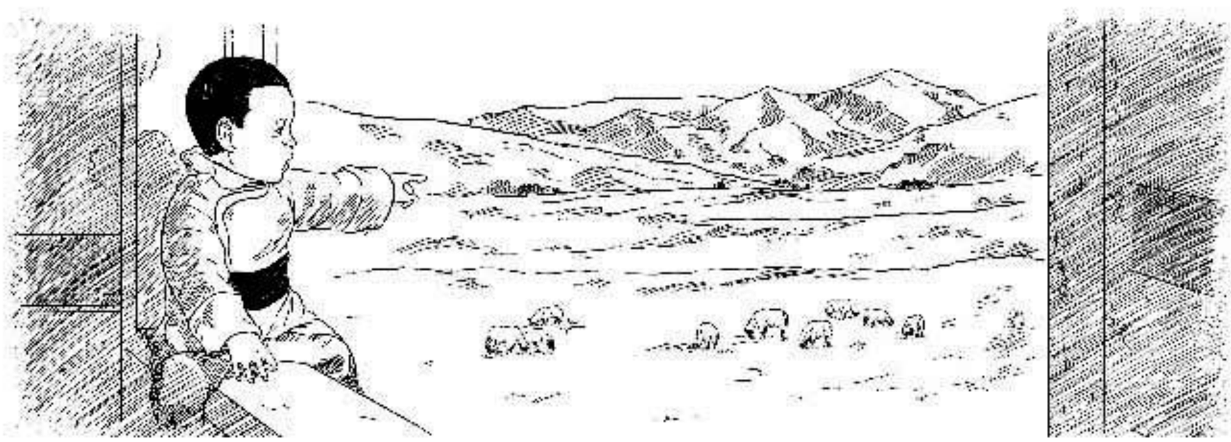
तिब्बती बौद्ध धर्म में, लामा महत्वपूर्ण शिक्षक होते हैं जो लोगों को ज्ञान की ओर ले जाते हैं. आज दुनिया में दस से बीस मिलियन तिब्बती बौद्ध हैं.





जब ल्हामो चलने लगा, तो वो खेत में अपनी मां के पीछे-पीछे जाता क्योंकि माँ खेत में काम करती थीं. जब माँ डज़ोमोस (याक और गाय के बीच का एक क्रॉस जानवर) का दूध निकालतीं तो ल्हामो दूध का कटोरा पकड़ता था. नन्हा ल्हामो चंचल था. जब माँ ने उसे अपने कंधों पर बैठातीं तो वो माँ को रास्ता दिखाने के लिए उनके कान खींचता था! जब माँ उसे मुर्गियों के अंडे लेने भेजतीं, तो वो ल्हामो को मुर्गियों के साथ बैठे और कुड़कुड़ाते हुए पाती थीं.

त्सेरिंग परिवार के खेत में याक, भेड़, बकरियां और घोड़े भी थे. ल्हामो के पिता विशेष रूप से घोड़ों से प्यार करते थे. लेकिन वो अक्सर अपने बच्चों से नाराज और उनसे सख्ती से व्यवहार करते थे. दूसरी ओर, ल्हामो की माँ कोमल और दयालु थीं. ल्हामो ने बाद में कहा, "करुणा के बारे में मेरी पहली शिक्षिका मेरी माँ थी."



करुणा का अर्थ होता है किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करना जो पीड़ित, आहत, या परेशानी में हो. जिस तरह से ल्हामो की मां ने अपने गांव में जरूरतमंद लोगों के साथ व्यवहार किया और उनकी मदद की, ल्हामो ने उनमें करुणा देखी. ल्हामो के पसंदीदा खेलों में से एक अपने कपड़े पैक करके यात्राओं पर जाने का नाटक करना था. वो घोड़े की सवारी करने का नाटक करते हुए, खिड़की की चौखट पर हाथ फेरता था. जब माँ उससे पूछतीं कि वो कहाँ जा रहा था तो वो कहता कि वो तिब्बत की राजधानी ल्हासा जा रहा था.

ल्हामो को नहीं पता था कि एक हज़ार मील से भी अधिक दूर, ल्हासा में, कुछ महत्वपूर्ण घटित हो रहा था. दिसंबर 1933 में, तेरहवें दलाई लामा की मृत्यु हो गई थी. इसलिए तिब्बत दो साल तक बिना किसी आध्यात्मिक नेता के रहा था. सरकारी अधिकारियों और धार्मिक नेताओं ने अगले दलाई लामा की तलाश शुरू कर दी थी.



गेदुन द्रुप्पा, पहले दलाई लामा

दलाई लामा कौन होते हैं?

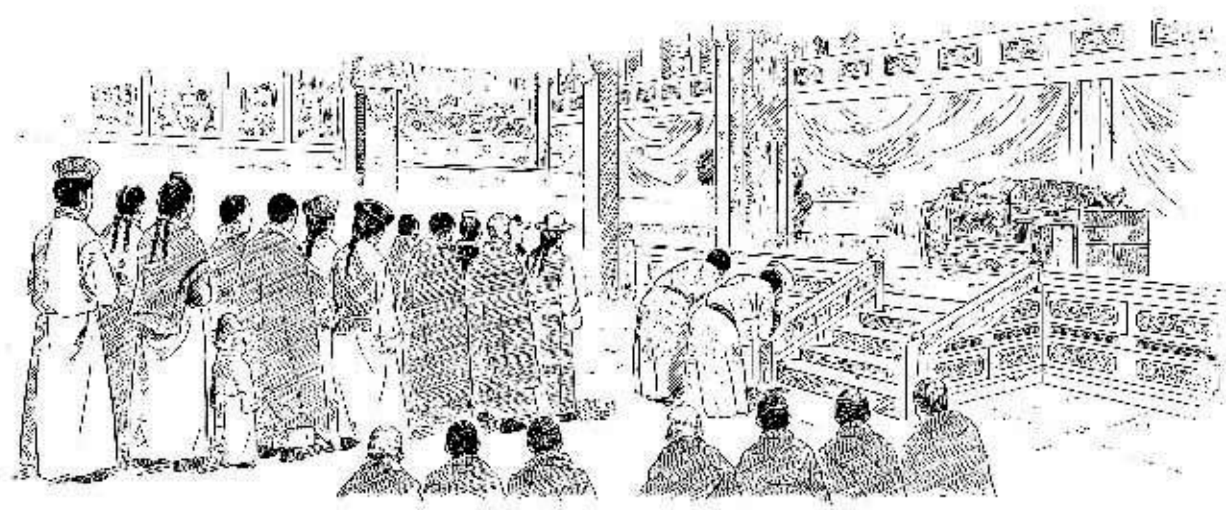
तिब्बती बौद्ध धर्म, कई समूहों में विभाजित है. सबसे शक्तिशाली गुट को गेलुग्पा या येलो हैट स्कूल कहा जाता है. इस स्कूल में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को दलाई लामा कहा जाता है. (दलाई "महासागर" शब्द से बना है और लामा का अर्थ है "शिक्षक.") उन्हें तिब्बत का राजनीतिक और धार्मिक नेता माना जाता है.

पहले दलाई लामा 1400 के दशक में रहते थे. पूरे इतिहास में चौदह दलाई लामा हुए हैं. तिब्बती बौद्धों का मानना है कि जब किसी दलाई लामा की मृत्यु होती है, तो वो दुनिया में वापस पैदा होते हैं - यानि पुनर्जन्म लेते हैं, जिससे वो तिब्बती लोगों का नेतृत्व करना जारी रख सकें और लोगों के साथ करुणा का संदेश साझा कर सकें.

अध्याय दो

चिह्नों की खोज

1933 में जब तेरहवें दलाई लामा की मृत्यु हुई, तो बौद्ध भिक्षुओं ने उनके शरीर को प्रदर्शित किया ताकि तिब्बती लोग उनके दर्शन कर सकें और उन्हें सम्मान दे सकें. भिक्षुओं ने दलाई लामा को ऐसे रखा ताकि उनका सिर दक्षिण की ओर झुका रहे. लेकिन एक सुबह, उन्होंने उनका सिर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ा हुआ पाया! जब दूसरी बार ऐसा हुआ तो भिक्षुओं को वो एक संकेत लगा.



भिक्षुओं का मानना था कि दलाई लामा की आत्मा का किसी नए व्यक्ति के शरीर में पुनर्जन्म होगा. शायद वो इस बात का संकेत था कि उनका अगला नेता पूर्वोत्तर क्षेत्र में पाया जाएगा.

पूरे तिब्बत में भिक्षु अगले दलाई लामा की तलाश में थे. रेटिंग रिनपोछे, जो तिब्बत के अस्थायी नेता के रूप में काम कर रहे थे, खुद संकेतों की तलाश में गए. उन्होंने उस झील की यात्रा की जिसमें लोग मानते थे विशेष शक्तियाँ थीं. सदियों से, तिब्बती लोगों ने प्रेरणादायक दृश्यों को देखने की उम्मीद में उस झील की यात्रा की थी.

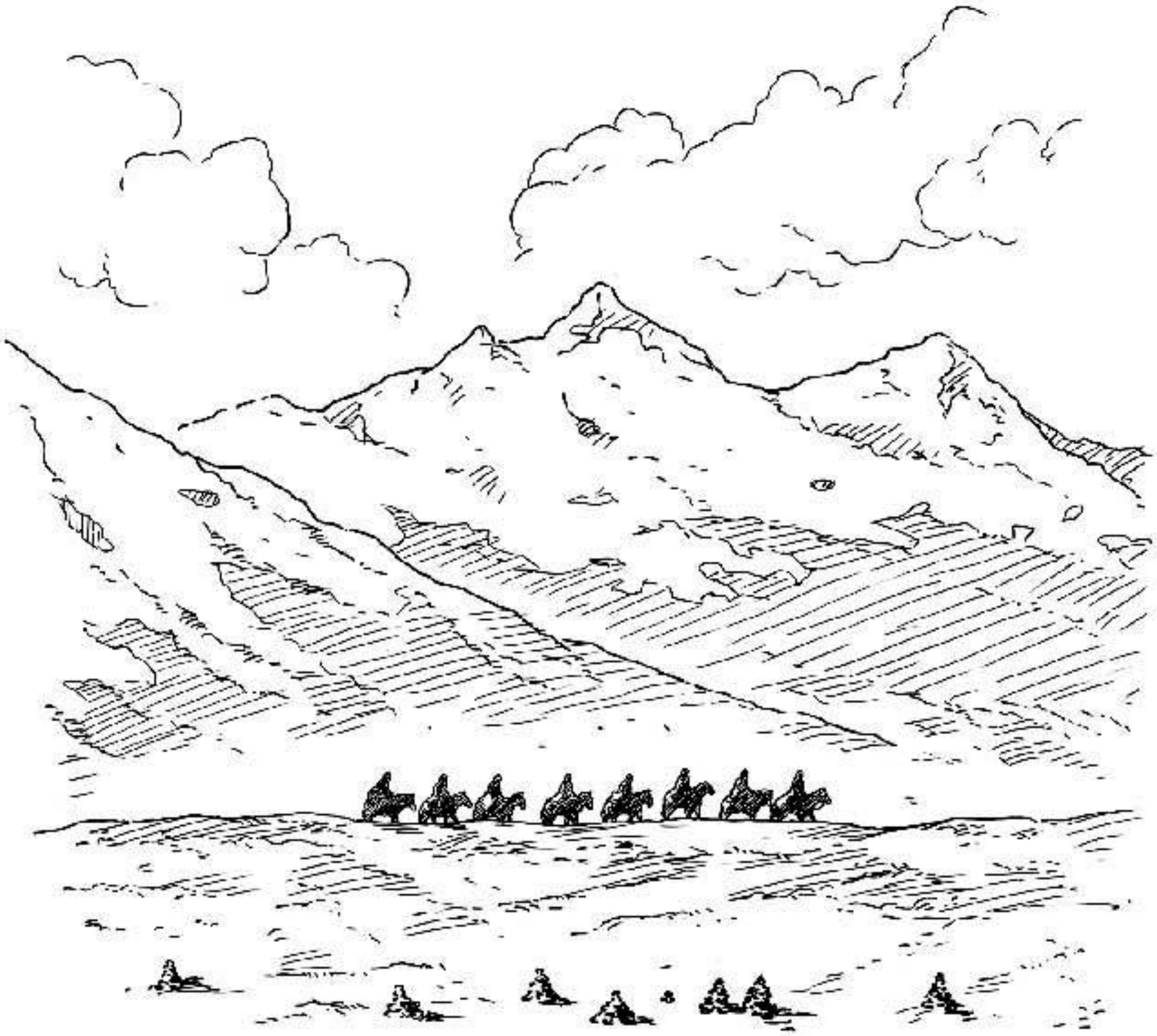


रेटिंग रिनपोछे

वहाँ पहुँचकर, रेटिंग रिनपोछे ने अपनी आँखें बंद कर लीं और गहराई से विचार किया. जब उन्होंने अपनी आंखें खोलीं, तो उन्होंने तीन तिब्बती अक्षरों को पानी से निकलते हुए देखा - "आह", "का" और "मा". उन्होंने नीली और सोने की छत के साथ एक तीन मंजिला मठ और पहाड़ी पर स्थित एक छोटा सा घर भी देखा. उन्हें उम्मीद थी कि ये संकेत उन्हें अगले दलाई लामा तक ले जाएंगे.

1936 के अंत में, भिक्षुओं और सरकारी सदस्यों के खोज दलों ने ल्हासा से पूर्व की ओर प्रस्थान किया.

उनमें से एक समूह ने अमदो प्रांत की यात्रा की, क्योंकि "मा" उन अक्षरों में से एक था जो रिटिंग रिनपोछे ने झील पर देखे थे. घोड़े की पीठ पर चढ़कर ऊबड़-खाबड़ जमीन और कड़ी बर्फ में वो एक कठिन यात्रा थी.



मठ

मठ तिब्बत में धार्मिक जीवन के केंद्र थे. माता-पिता अपने छोटे बेटों को अक्सर छह और बारह साल की उम्र के बीच, मठों में भेज देते थे. वहां, पर बच्चे लामा कहलाने वाले शिक्षकों से सीखते थे और फिर खुद भिक्षु बन जाते थे. ल्हामो के जन्म के समय आधे से अधिक तिब्बती लड़के और पुरुष भिक्षु थे.

मठों में, लड़कों को अपना सिर मुंडवाना पड़ता था और लाल-पीले वस्त्र पहनने पड़ते थे. वे पवित्र बौद्ध पुस्तकों का अध्ययन करते और जप यानि प्रार्थना करना सीखते थे. वो ध्यान करना यानि अपने दिमाग को चुपचाप केंद्रित करना भी सीखते थे. जब छात्र तैयार हो जाते तो फिर वे संन्यासी बनने का संकल्प लेते थे. वे सादगी में अपना जीवन व्यतीत करते और अपना शेष जीवन मठों में और अपने समुदाय की सेवा में बिताते थे.

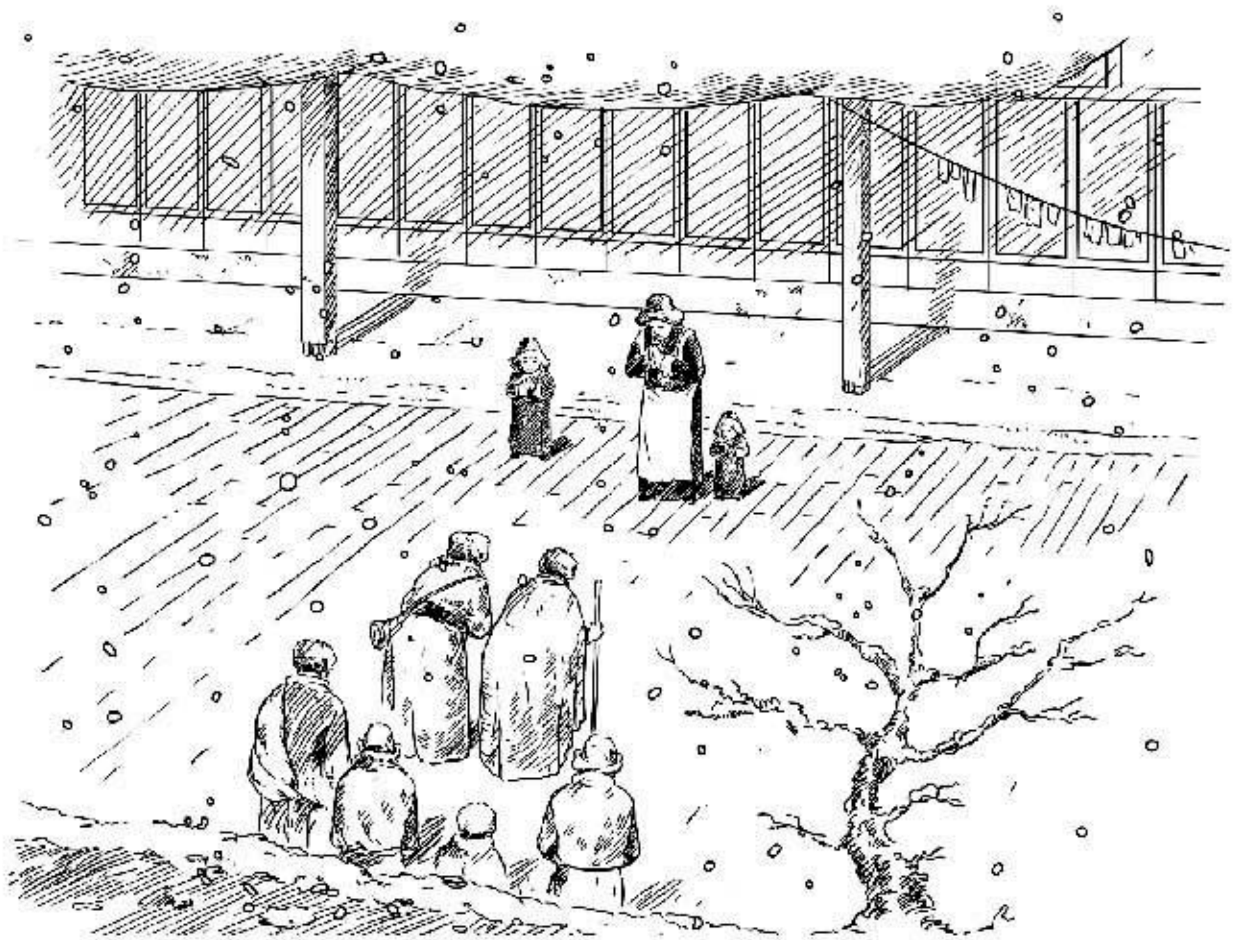


कुछ महीनों के बाद, ल्हासा की टीम अमदो पहुँची और उन्होंने जो भी देखा उससे वे प्रसन्न हुए. अमदो का मठ तीन मंजिल का था और उसकी नीली और सोने की छत थी, ठीक वैसे ही जैसे दर्शन में दिखा था! उन्होंने वहां कुछ समय बिताया, और उन संभावित लड़कों की सूची बनाई जो अगले दलाई लामा बन सकते थे.



उन्होंने उस सूची में कई बच्चों का साक्षात्कार और परीक्षण भी किया, लेकिन वे सभी असफल रहे. फिर बस एक ही नाम बचा रह गया.

खोज दल मठ से एक छोटे से घर की ओर जाने वाली सड़क पर गया, जो रेटिंग रिनपोछे द्वारा अपने दर्शन में बताए गए घर से मेल खाता था. वे उम्मीद कर रहे थे कि तेरहवें दलाई लामा की आत्मा का उस युवा लड़के के रूप में पुनर्जन्म हुआ होगा जो उस घर में रहता था. यह ल्हामोस का घर था.



जिस दिन वहां टीम पहुँची उस दिन बहुत बर्फ़ पड़ रही थी. इसलिए खोज दल ने यात्री होने का ढोंग किया और घर में शरण मांगी. डिकी ने अपनी दयालु भावना से उनका स्वागत किया; उन्हें चाय, रोटी और सूखा मांस खिलाया; और उन्हें रात बिताने के लिए आमंत्रित किया. परिवार को यह नहीं पता था कि उनके आगंतुक, दलाई लामा की खोज के मिशन पर थे.



कुछ हफ्ते बाद, वही लोग वापस आए. फिर जब उच्च कोटि के लामा, खेतसांग रिनपोछे रसोई में बैठे, तो ल्हामो उनकी गोद में कूदकर बैठ गया. "मैंने उनमें से कई को पहचान लिया था," ल्हामो ने बाद में कहा, "हालांकि मैं उनसे पहले कभी नहीं मिला था." ढाई साल के ल्हामो ने खेतसांग के गले में पड़ी प्रार्थना की माला पकड़ ली. उसे वो माला चाहिए थी. उस माला के मोती पिछले दलाई लामा के थे. खेतसांग को वो भी एक संकेत लगा कि ल्हामो, तेरहवें दलाई लामा का पुनर्जन्म हो सकता था.

लेकिन खेतसांग और उसके आदमियों को सुनिश्चित होने के लिए ल्हामो की परीक्षा लेनी थी. उन्होंने युवा ल्हामो को प्रार्थना की माला और छोटे डमरू सहित विभिन्न वस्तुएँ दिखाईं. कुछ वस्तुएं तेरहवें दलाई लामा की थीं, जबकि अन्य नहीं थीं. खोज टीम इंतजार करती रही. यदि ल्हामो में वास्तव में अंतिम दलाई लामा की आत्मा होती, तो वो सही वस्तुओं को अपनी वस्तुओं के रूप में पहचान पाता. ल्हामो ने सभी चीज़ों को एकदम सही चुना. बाद में, ल्हामो ने कहा, "ज्यादातर लोगों को वो रहस्यमय और यहां तक कि जादुई लग सकता था, लेकिन जब मैंने उन वस्तुओं को देखा तो मुझे उनमें कुछ भी असाधारण नहीं लगा. ऐसा लगा कि जिन चीजों को मैं देख रहा था, मैं उनका आदी था."



आगंतुकों ने अंत में ल्हामो के माता-पिता को बताया कि वे असल में चौदहवें दलाई लामा को खोजने आये थे. यदि उनका बेटा चुना गया, तो यह ल्हामोस परिवार के लिए एक बड़ा सम्मान होगा. भिक्षुओं ने झूठमूठ कहा कि वे कुछ अन्य लड़कों के बारे में भी विचार कर रहे थे. लेकिन वास्तव में, वे पहले ही तय कर चुके थे कि ल्हामो ही, तिब्बत के पुनर्जन्म वाले नेता थे.

अगली सुबह जब खोजी दल रवाना हुआ, तो ल्हामो रोया. वो उनके साथ जाना चाहता था! लेकिन ल्हामो अभी भी बहुत छोटा था. उसे अपने परिवार के साथ रहने की जरूरत थी. कुछ वर्षों के बाद, जब ल्हामो चार वर्ष का हो गया, तब वो ल्हासा जाने को तैयार हुआ.

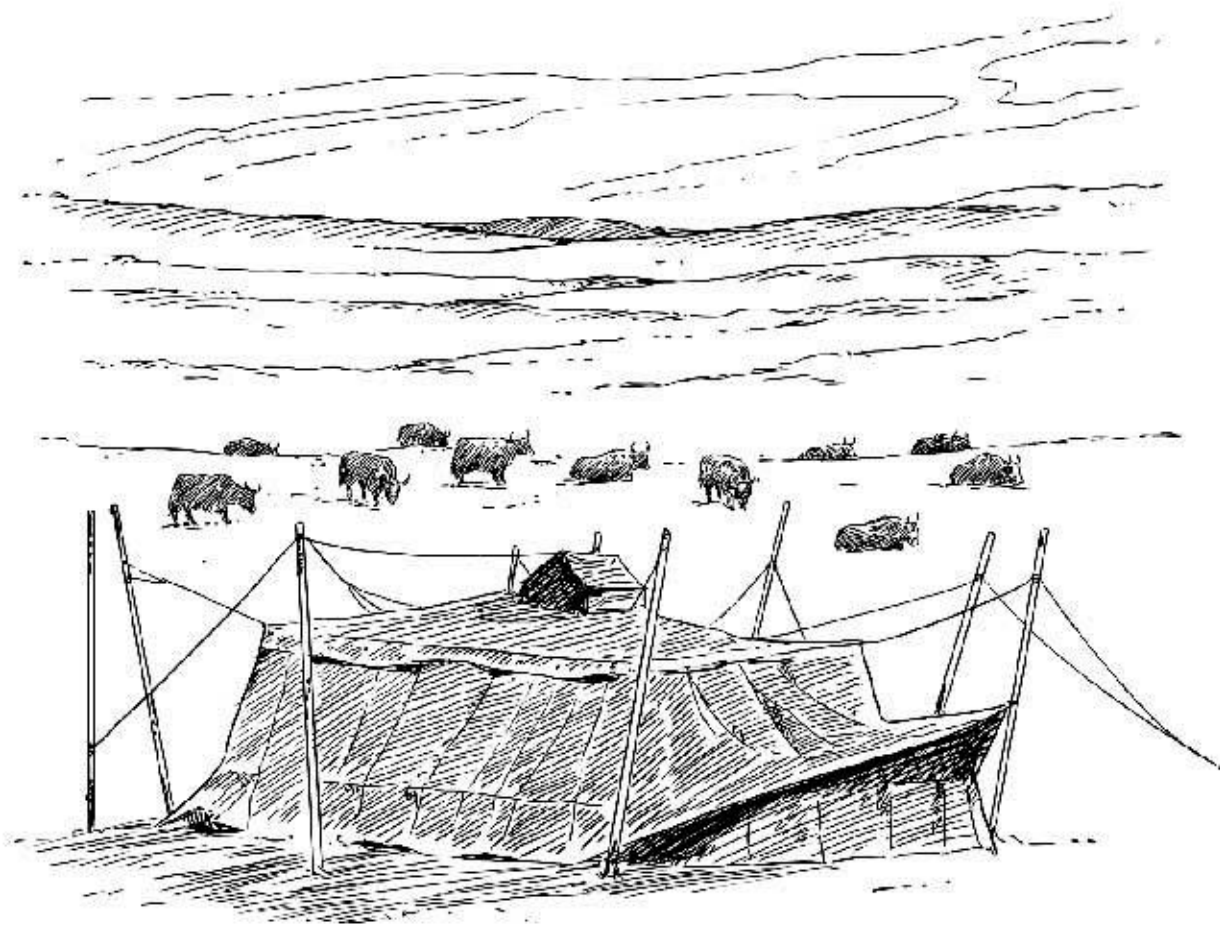


अध्याय 3

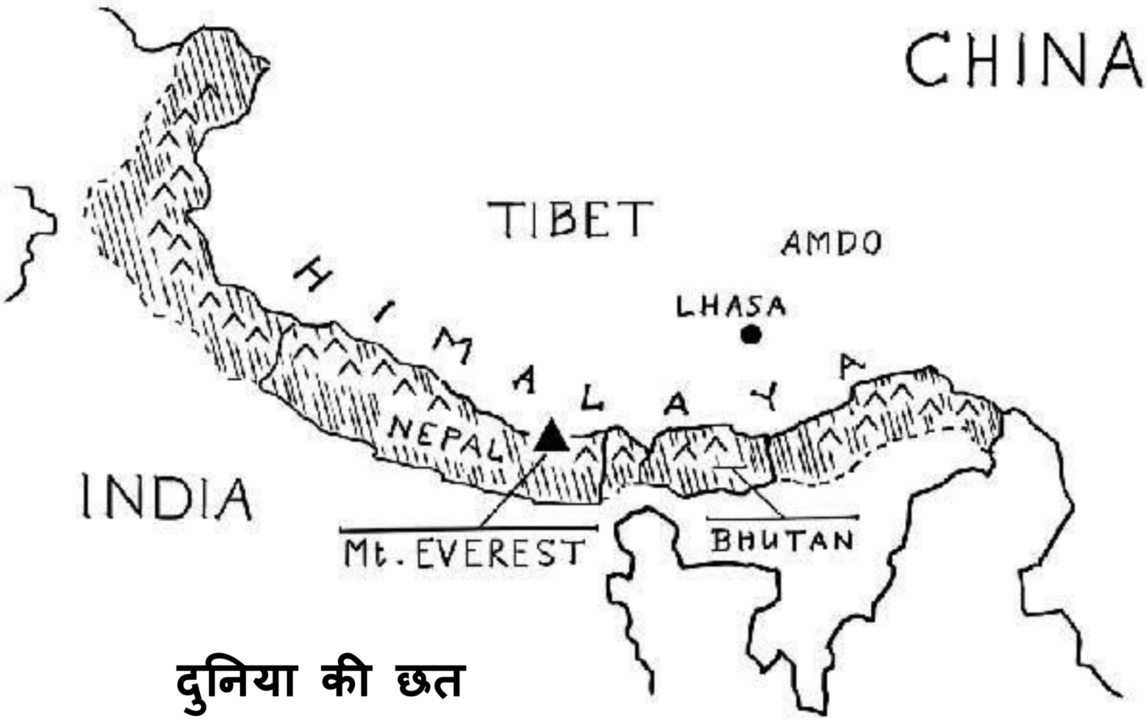
सिंहासन की यात्रा



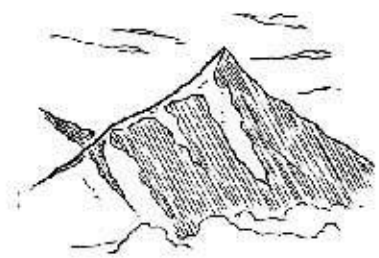
एक बड़ा कारवां जुलाई 1939 में, अम्दो क्षेत्र से ल्हासा की तीन महीने की यात्रा के लिए निकला. उस समूह में लगभग पचास लोग थे, जिसमें ल्हामो के माता-पिता, उनके भाई ग्यालो और लोबसांग भी शामिल थे. कारवां में बहुत सारी आपूर्ति, और तीन सौ से अधिक याक, ऊँट, घोड़े, और खच्चर भी शामिल थे. सवारी करने के लिए कोई कार या सड़कें नहीं थीं.



वे घास के मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में से, पैदल या जानवरों की पीठ पर ऊबड़-खाबड़ मार्गों पर चलते हुए गए. हर रात वे याक के बालों से बने बड़े-बड़े तम्बुओं में सोते थे.



दुनिया की छत



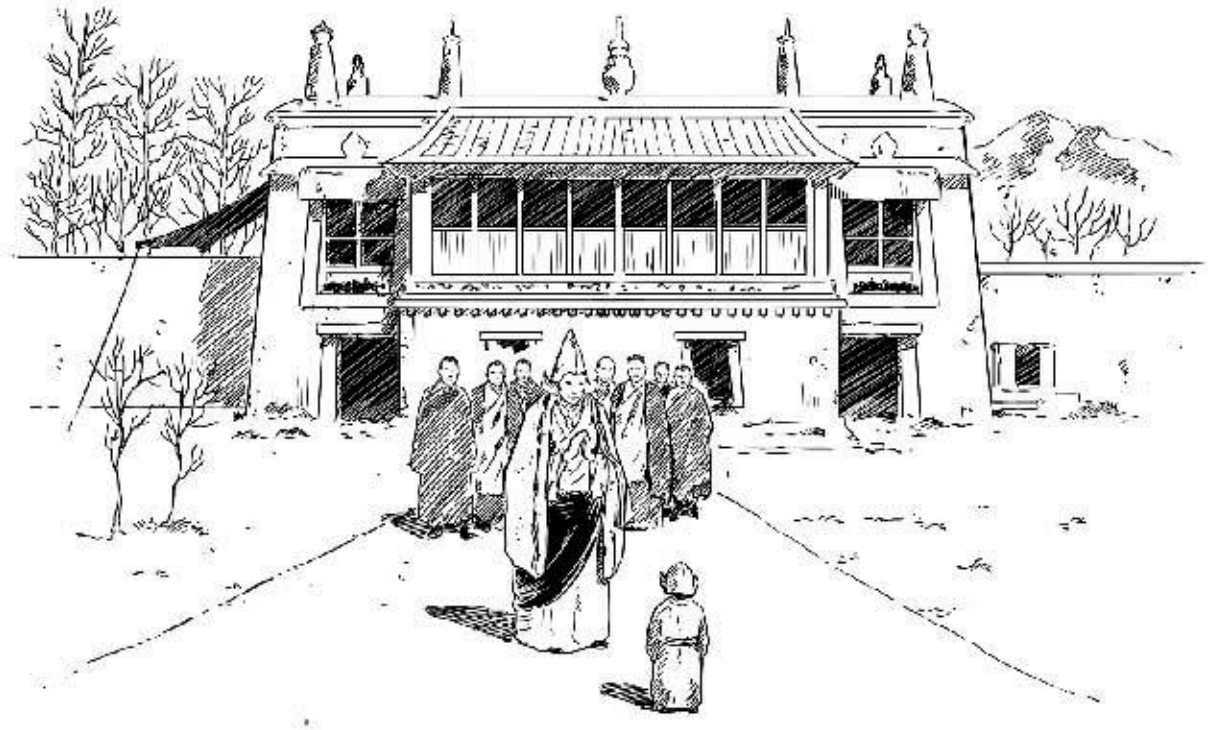
तिब्बत का अधिकांश भाग एक पठार है. वो एशिया महाद्वीप पर भूमि का एक ऊँचा, समतल क्षेत्र है. तिब्बत की सबसे लंबी सीमाएँ नेपाल और भारत के साथ हैं. वो पहाड़ों से घिरा हुआ है. माउंट एवरेस्ट सहित हिमाच्छादित हिमालय, जो समुद्र तल से 29,028 फीट ऊपर उठता है, तिब्बत की दक्षिणी सीमा बनाते हैं. चूँकि तिब्बत पृथ्वी पर सबसे ऊँची भूमि पर स्थित है, इसलिए उसे अक्सर "विश्व की छत" कहा जाता है.

ल्हामो एक पालकी में सवार हुआ. पालकी एक छोटे से कमरे की तरह थी, जो पीले कपड़े की बनी थी और घोड़ों द्वारा ले जाई गई थी. पालकी की खिड़कियों से ल्हामो ने ऐसे दृश्य देखे जो उसने पहले कभी नहीं देखे थे. उसने झीलों, पहाड़ों, घाटियों, मैदानों और बहुत सारे जानवरों को पार किया: जंगली याक के झुंड, बत्तखों के झुंड, और जंगली गधे. ल्हामो कभी-कभी यात्रा में परेशानी भी खड़ा करता था. जब वो ऊब जाता था, तो वो अपने भाई लोबसांग से लड़ता था, जो उसके साथ सवारी कर रहा था.



तिब्बती अधिकारियों ने औपचारिक रूप से घोषणा की कि राजधानी में आने वाला लड़का अगला दलाई लामा था. ल्हासा के करीब आते ही सैकड़ों लोगों ने कारवां के रास्ते में लाइन लगानी शुरू कर दी. वे ल्हामो के दर्शन के लिए उत्सुक थे.

कारवां, ल्हासा से लगभग तीन दिन दूर एक मठ में रुका. वहाँ रेटिंग रिनपोछे ने उनका स्वागत किया. भले ही ल्हामो इतना छोटा था, लेकिन उसने शुरू से ही एक पवित्र नेता की तरह व्यवहार किया, और उसने मिलने आने वाले लोगों को आशीर्वाद दिया. कारवां और लम्बा तब हुआ रेटिंग और अन्य भिक्षु भी कारवां में शामिल हुए. यात्रा के अंतिम भाग के लिए, ल्हामो एक अधिक फैंसी पालकी में सवार हुआ, जिसे अब घोड़े नहीं, बल्कि आठ आदमी अपने कंधों पर ढो रहे थे.



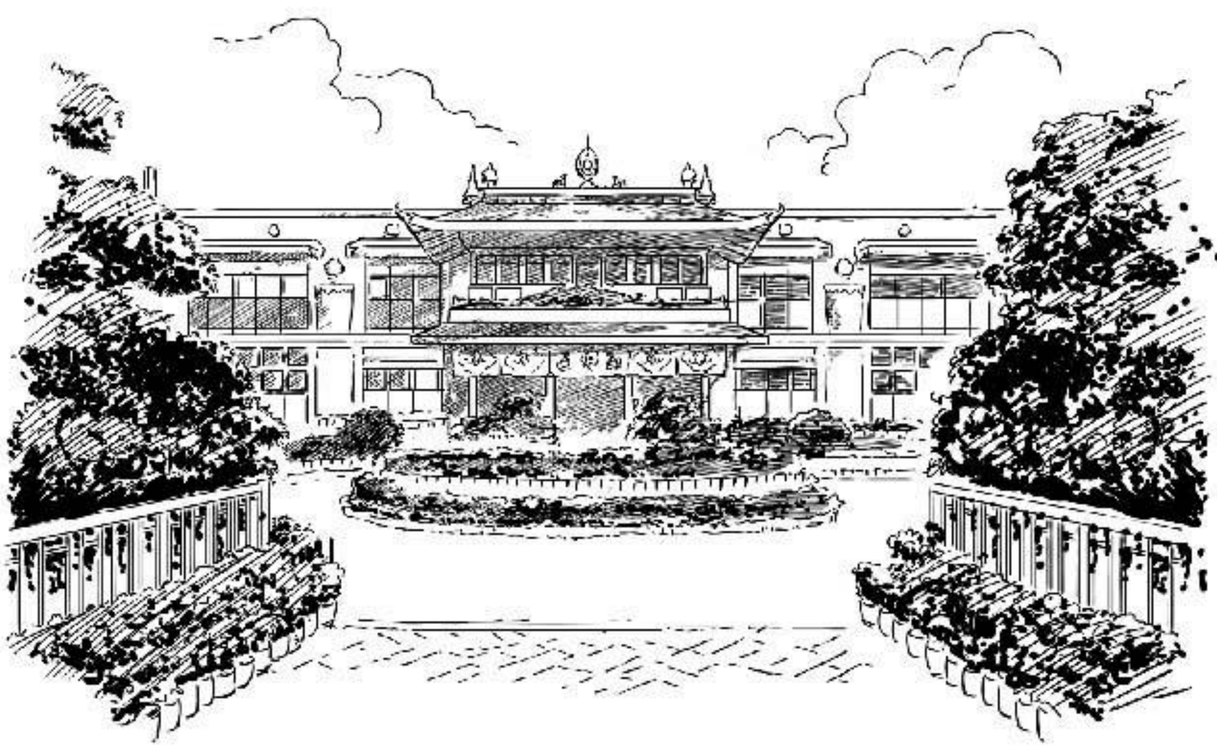
8 अक्टूबर, 1939 को जैसे ही उनका जुलूस शहर में दाखिल हुआ, दोनों ओर भीड़ जमा हो गई. कारवां के लिए सड़कों से गुज़ारना भी मुश्किल हो गया! तिब्बती लोग अपना सम्मान दर्शाने के लिए सुगंधित अगरबत्ती की छड़ें और सफेद स्कार्फ पकड़े थे. कुछ लोग खुशी से रो रहे थे. अंतिम दलाई लामा की मृत्यु हुए छह साल बीत गए थे, इसलिए वो उस छोटे लड़के को देखकर खुशी से भर गए जो उनका अगला धार्मिक और राजनीतिक नेता बनने वाला था.

फिर ल्हामो को शहर के बीच में स्थित एक मंदिर में लाया गया. अन्य भिक्षुओं की तरह उनके भी बाल मुंडवा दिए गए और उन्हें एक नया नाम भी दिया गया. ल्हामो को अब संक्षेप में जम्फेल न्गवांग लोबसंग येशे तेनज़िन ग्यात्सो, या सिर्फ तेनज़िन ग्यात्सो के रूप में जाना जाएगा. लेकिन उनके कई नामों में से हरेक का एक विशेष अर्थ था. उससे तिब्बती लोगों को यह समझ में आया कि वो छोटा लड़का एक अच्छा वक्ता, दयालु और ज्ञान का सागर था.



तीन महीनों की कठिन यात्रा के बाद, त्सेरिंग परिवार को आराम करने के लिए एक खूबसूरत जगह पर लाया गया - शहर के दो महलों में से एक, नोरबुलिंगका महल में. उन्हें एक शाही परिवार की तरह रखा गया. ल्हामो, जो अभी केवल चार साल का था, उसे अभी भी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वो लोगों के ध्यान का केंद्र क्यों बना था.





नोरबुलिंगका महल

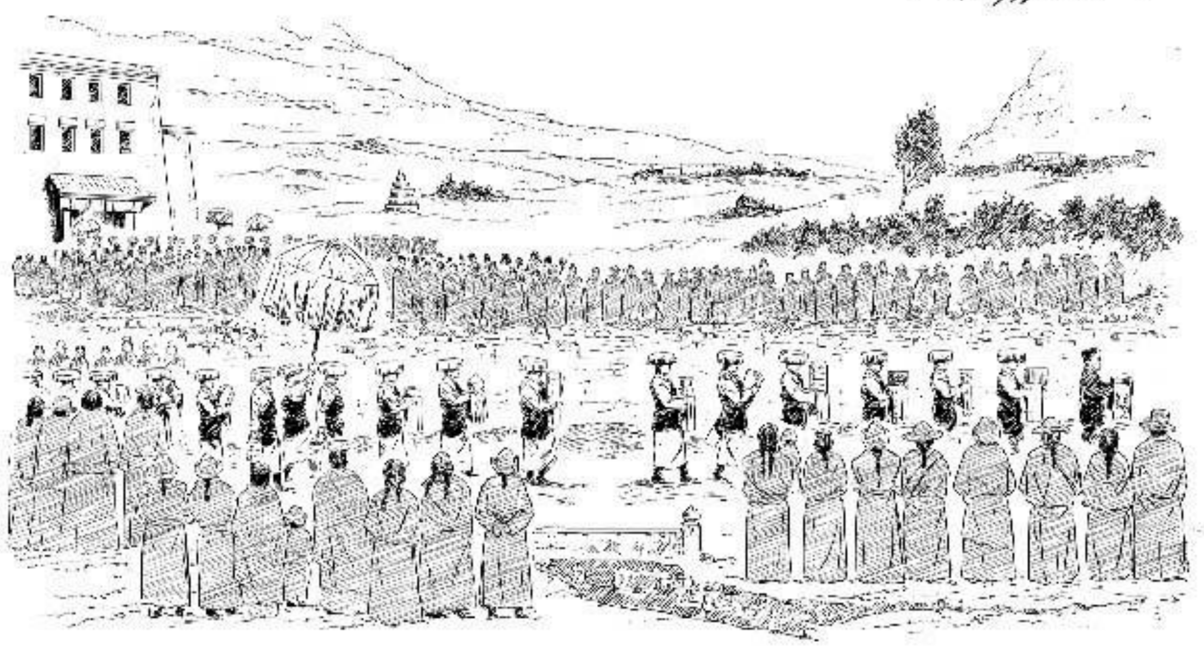


महल उसके छोटे से गाँव के घर जिसे वो अच्छी तरह से जानता था, से कहीं अधिक आलीशान था. जिज्ञासु और चंचल, उसने अपने नए घर की खोजबीन की. एक दिन, उसकी माँ ने उसे अपने कमरों में रखे कई संदूकों को खोलते हुए पाया. अंदर तेरहवें दलाई लामा का सामान रखा था. उसने कहा कि वो अपने दांतों की तलाश कर रहा था! और आखिर उसे वो बक्सा मिल ही गया जिसकी उसे तलाश थी. जब उसने और मां ने उस बक्से को खोला, तो उन्हें उसमें पिछले दलाई लामा के नकली दांत मिले! हालांकि ल्हामो एक छोटा लड़का था, लेकिन उसके आसपास के लोगों ने इसे एक और सबूत के रूप में देखा कि वो वास्तव में तिब्बत का अगला नेता था.

ल्हामो, नोरबुलिंगका महल में चार महीने तक रहा. फिर 21 फरवरी को नौकरों ने उसे सुबह जल्द ही जगा दिया. किसी भी एक बच्चे की तरह, उसने शिकायत की कि उसे नींद आ रही थी और वो और सोना चाहता था. लेकिन लोगों ने उसे बताया कि वो एक महत्वपूर्ण दिन था. अब वो पोटाला महल में रहने जाएगा.

एक बार फिर, युवा लड़के ने खुद को एक भव्य जुलूस में पाया. वो खुद एक सुनहरी पालकी में सवार हुआ, इस बार एक महल से दूसरे महल तक नौकर उसके घर का सामान - भोजन, बर्तन और धूपदान, कपड़े और चादरें लेकर पहले चले. परेड में महत्वपूर्ण सरकारी सदस्य और धार्मिक नेता भी शामिल थे. सभी ने रंगीन कपड़े पहने थे, और सब कुछ चमकीले रंगों में सजाया गया था, यहाँ तक कि घोड़ों को भी. हजारों तिब्बती, महलों के बीच के रास्ते में भी अपने बेहतरीन कपड़े पहने हुए कतारबद्ध खड़े थे. गीतों और अगरबत्ती की सुगंध से हवा भरी थी.





अगला दिन, 22 फरवरी, 1940, राज्याभिषेक का दिन था—जिस दिन नए दलाई लामा पहली बार तिब्बत के सिंहासन पर बैठना था. पोटाला पैलेस का मुख्य असेंबली हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था. भीड़ ने चार साल के बच्चे को शेर के सिंहासन पर चढ़ते हुए देखा. वो पूरे दिन चुपचाप बैठा रहा, प्रार्थनाओं को सुनता रहा, नर्तकियों को देखता रहा, और समारोहों का आनंद लेता रहा. फिर दावत हुई—और युवा दलाई लामा को सबसे पहले खाना परोसा गया.

दिन के अंत में, उन्हें पोटाला पैलेस में उनके कमरे में ले जाया गया. इतने छोटे लड़के को, आने वाले कई व्यस्त दिनों के लिए अब आराम की जरूरत थी. अब जबकि यह आधिकारिक था, उन्हें चौदहवें दलाई लामा के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रशिक्षित होने की भी आवश्यकता थी.

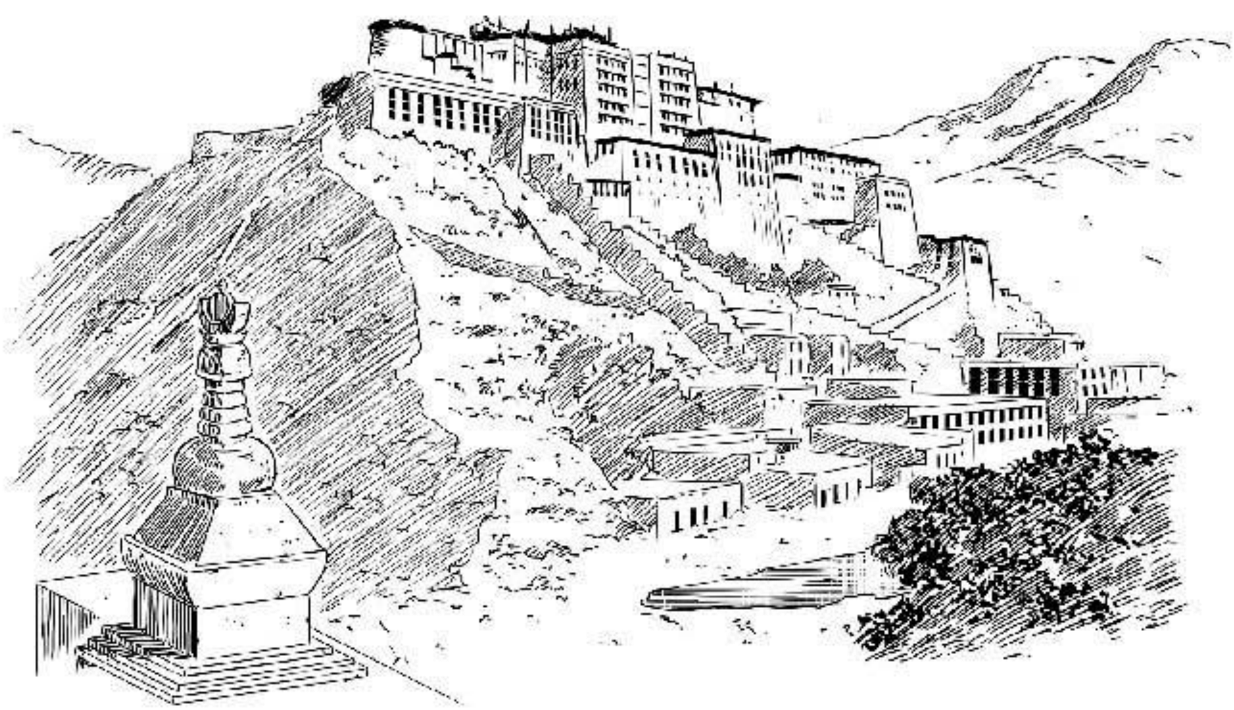


अध्याय 4

बढ़ा और सीखा

विशाल पोटाला महल ल्हासा के सामने एक पहाड़ी पर ऊँचा खड़ा था. नीचे शहर से, अपनी तिरछी दीवारों के कारण वो वास्तव में जितना था उससे भी अधिक ऊँचा दिखाई पड़ता था. मंदिर, प्रार्थना कक्ष, कार्यालय, पुस्तकालय, शयनकक्ष और यहां तक कि उसकी तेरह मंजिलों में एक कालकोठरी भी थी. महल में एक हजार से अधिक कमरे थे!

महल में दलाई लामा के कमरे ऊँचे थे और वे अक्सर तेल के धुएं से अंधेरे हो गए थे. दलाई लामा को अपनी उम्र के दोस्त बनाने की इजाजत नहीं थी, और वो अकेले ही रहता था. वो नीचे शहर के बच्चों को टेलीस्कोप से देखता और सोचता था कि भला वो उनके साथ क्यों नहीं खेल सकता था. इसलिए उसने महल के नौकरों से दोस्ती की. वो भोजन के प्रभारी भिक्षु के बहुत करीब था. उस आदमी का नाम पोंपो था. पोंपो, दलाई लामा की मां की तरह ही दयालु था. उन्होंने दलाई लामा के साथ खेल खेले और उन्हें खाने के लिए चीनी के टुकड़े भी दिए.





दलाई लामा के भाई लोबसांग जो उनसे दो वर्ष बड़े थे, को भी उनके साथ पोटाला में रहने की अनुमति मिली थी. और तिब्बती सरकार ने उनके परिवार के लिए पास में एक घर उपलब्ध कराया था. दलाई लामा वहां अपने परिवार से मुलाकात करते थे. क्योंकि बौद्ध धर्म के अनुसार किसी भी जीवित वस्तु को मारना पाप था इसलिए दलाई लामा और महल के भिक्षु जानवरों का मांस नहीं खाते थे.



लेकिन अपने माता-पिता के घर में दलाई लामा मछली, अंडे और सूअर का मांस चुपके से जाकर खाता था. उसे घबराने की या चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि आखिर वो दलाई लामा था!



तकत्र रिनपोछे

अपनी कम उम्र के कारण दलाई लामा अभी तिब्बत पर शासन करने के लिए तैयार नहीं थे. इसलिए पहले रिटिंग रिनपोछे ने और फिर तकत्र रिनपोछे ने दलाई लामा के बदले में शासन किया. लेकिन जब दलाई लामा छह साल के हुए, तो उनकी उम्र बौद्ध भिक्षु के रूप में प्रशिक्षण शुरू करने की हुई. शिक्षकों ने दलाई लामा और लोबसांग को एक साथ पढ़ाया. लड़कों ने पढ़ना और लिखना सीखा. और उन्हें धार्मिक ग्रंथों को कंठस्थ करना पड़ा. उन्होंने सीखा कि कैसे मौन होकर ध्यान करना होता है और जो कुछ उन्होंने सीखा है उस पर चिंतन भी करना है.



शिक्षकों ने महसूस किया कि दलाई लामा एक अच्छे छात्र था. लेकिन वो युवा छात्र अक्सर पढ़ने की बजाए खेलना चाहता था. उसे लोबसांग के साथ महल के सभी कमरों की खोजबीन करना अच्छा लगता था. कमरे बेशकीमती सोने और चांदी की वस्तुओं, चित्रित स्क्रॉल, किताबें, जूते, तलवार, हथियार और कवच से भरे हुए थे. दलाई लामा को विशेष रूप से संगीत बक्सों और घड़ियों के साथ छेड़छाड़ करना पसंद था, यह देखने के लिए कि वे कैसे काम करते थे. वो उनके अंजर-पंजर अलग कर देता था और उन्हें फिर से एक-साथ जोड़ता था.



यद्यपि वो अभी भी बहुत छोटा था, सभी लोग उसे परम पावन (होलीनेस) बुलाते थे. लोग उनसे औपचारिक रूप से बात करते और उन्हें झुककर प्रणाम करते थे, और यहाँ तक कि उनके सामने जमीन पर लेट जाते थे. जब वो कुछ गलत करते, तो भिक्षु उन्हें दंड नहीं देते थे. आखिर वो उनके नेता थे! उसके बजाय शिक्षक अक्सर गरीब लोबसांग को दंडित करते थे!

दलाई लामा ने पोटाला पैलेस में सर्दियां बिताता था. ग्रीष्मकाल में, वो नोरबुलिंगका लौट आता था. उसे अपना ग्रीष्म महल अधिक पसंद था! वो छोटा था और उसमें 1,000 के बजाय केवल 350 कमरे थे. नोरबुलिंगका का अर्थ था "रत्नों से सुसज्जित उद्यान." और दलाई लामा उसके फूलों और फलों के पेड़ों के बगीचों में खेलते थे. वो अपनी छोटी नाव को तालाब में चलाते थे और पानी में मछलियों के लिए भोजन गिराते थे, जबकि वयस्क उन्हें किनारे से देखते थे.

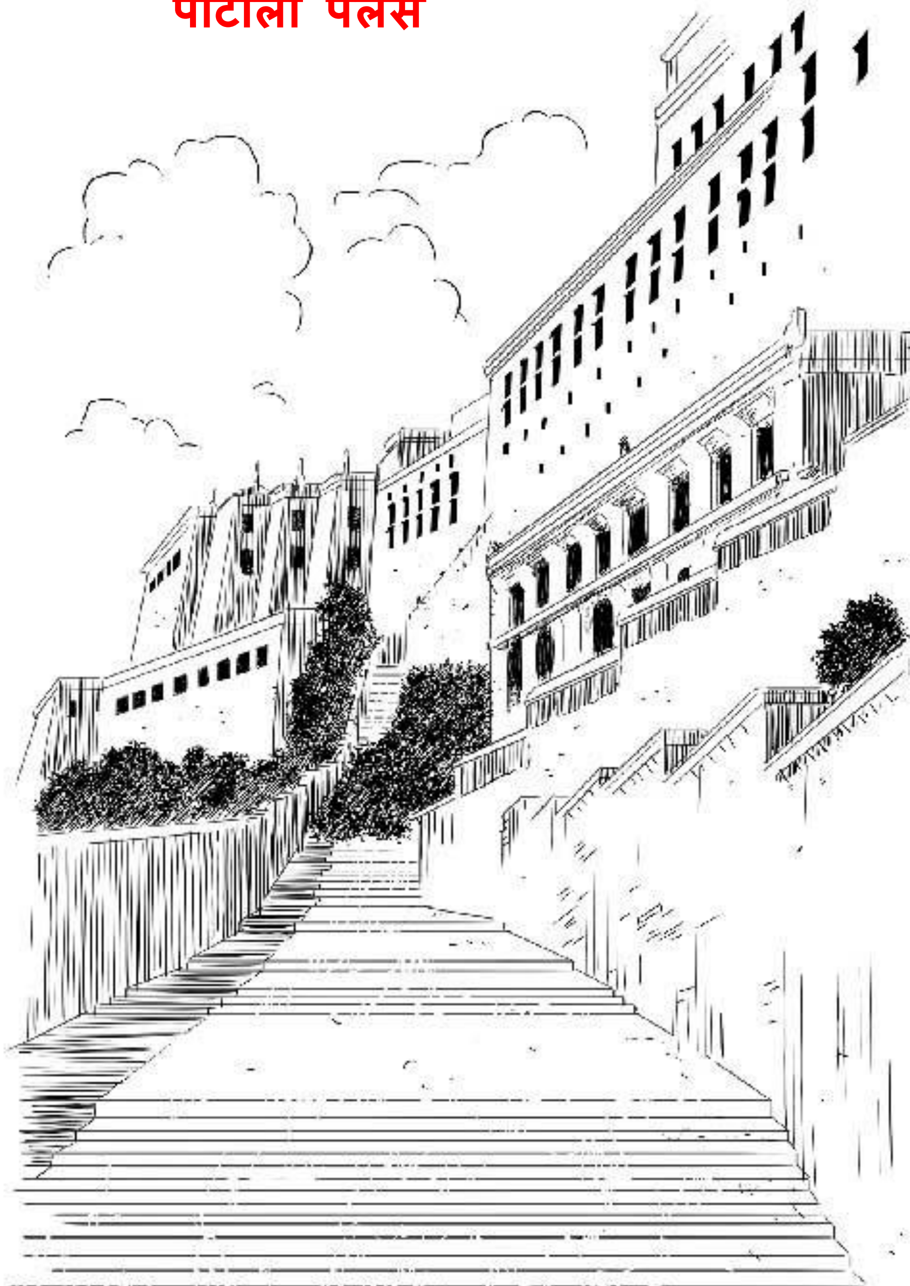


जब दलाई लामा आठ साल के हुए, तो उनके भाई लोबसांग ने एक दूसरे स्कूल में जाने के लिए महल को छोड़ दिया. फिर वे एक-दूसरे से छुट्टियों में ही मिलते थे लेकिन अब पहले जैसी बात नहीं थी.



दलाई लामा ने कहा, "मुझे याद है, मैं खिड़की में खड़े होकर देख रहा था, मेरा दिल दुख से भरा हुआ था, क्योंकि मेरा भाई दूरी में कहीं गायब हो गया था."

पोटाला पैलेस



पोटाला पैलेस ल्हासा में एक एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित था. पांचवें दलाई लामा ने एक सातवीं शताब्दी के एक महल की नींव पर उसका निर्माण 1645 में शुरू किया था. महल की एक सुनहरी छत और दो मुख्य भाग थे - लाल महल और सफ़ेद महल. लाल महल पवित्र स्थल था और उसका उपयोग प्रार्थना और बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए किया जाता था. सफ़ेद महल में कई सरकारी कार्यालय थे.

पोटाला में तिब्बती इतिहास और धर्म की कई कलाकृतियां थीं. उसके कमरों को सोने और रत्नों से सजाया गया था. वे चित्रों और मूर्तियों से भरे हुए थे. दीवारों पर बने भित्ति चित्र, तिब्बत की कहानी दर्शाते थे.



महल तक जाने के लिए कोई एस्केलेटर या लिफ्ट नहीं थी. आगंतुकों को वहाँ जाने के लिए चार सौ से अधिक सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं!

त्सेरिंग परिवार भी बदल रहा था. दलाई लामा के भाई नोरबू एक भिक्षु बन गए थे, लोबसांग और ग्यालो स्कूल में थे, और उनकी बहन डोलमा रहने के लिए परिवार के साथ वापस आ गई थी. उनके माता-पिता की एक और बेटी, जेट्सन पेमा और एक और बेटा, तेंदज़िन घोएग्याल थे. दलाई लामा के पिता अक्सर सुबह की चाय के लिए महल में आते थे, इसलिए दलाई लीमा उन्हें अक्सर देख पाते थे. लेकिन दुख की बात थी कि 1947 में, जब वे केवल बारह वर्ष के थे, तब उनके पिता की मृत्यु हो गई. प्रथा के अनुसार, परिवार ने उनतालीस दिनों तक प्रार्थना की और पिता का सारा सामान दान कर दिया.

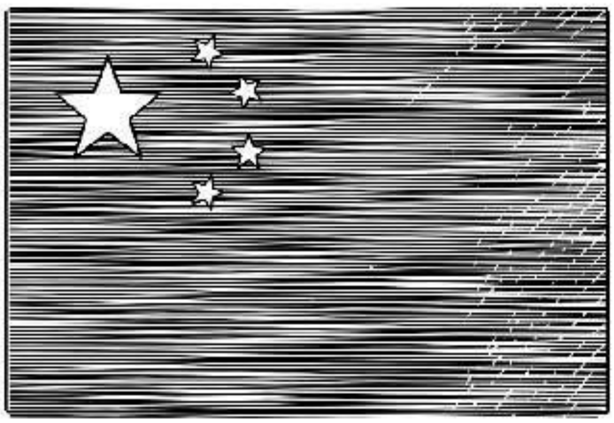


हेनरिक हैरर



जब दलाई लामा अपनी किशोरावस्था में पहुँचे, तब भी वे महल में एक आश्रय का जीवन व्यतीत कर रहे थे, लेकिन वो तिब्बत के बाहर की दुनिया के बारे में जानने के लिए अधिक उत्सुक थे. उन्होंने सुना कि ऑस्ट्रिया का एक पर्वतारोही, जिसका नाम हेनरिक हैरर था, तिब्बत का दौरा कर रहा था. दलाई लामा उस साहसी अन्वेषक से मिलना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें महल में आने का निमंत्रण दिया. हैरर ने दलाई लामा को इतिहास, विज्ञान और भूगोल के बारे में पढ़ाया. दलाई लामा के कई जिज्ञासु सवालों का जवाब देने में उन्हें खुशी हुई.

तिब्बतियों ने सबसे पहले दलाई लामा को ल्हासा में एक छोटे लड़के के रूप में आते हुए देखा था. लेकिन जैसे-जैसे दलाई लामा बड़े होते गए, उन्होंने एक नेता बनना सीखा. उन्होंने महल में अपने सरकारी सलाहकारों को देखा और उनसे भी सीखा. भिक्षुओं के साथ उनके अध्ययन ने उन्हें बौद्ध धर्म के मूल्यों की शिक्षा दी. और अकेले रहने और दूसरों से आश्रय ने उन्हें गहराई से सोचने और नेतृत्व और करुणा के विचारों पर ध्यान देने के लिए प्रशिक्षित किया. ये सभी बातें उन्हें तिब्बत के लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए तैयार कर रही थीं. दलाई लामा जानते थे कि उनके लोग उनसे बहुत उम्मीदें रखते थे. वो अपने लोगों के लिए कुछ महान कार्य करना चाहते थे.



पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना का ध्वज

अध्याय 5

एक हिंसक चीनी अधिग्रहण

1949 में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने चीन की सरकार पर अधिकार कर लिया. साम्यवादियों का मानना था कि लोग कैसे रहेंगे और कैसे काम करेंगे, उस पर व्यक्ति का नहीं बल्कि समुदाय का नियंत्रण होना चाहिए.

चीन और तिब्बत की सीमाएं उत्तर और पूर्व में मिलती थीं. कभी तिब्बत पर चीन का शासन रहा था, लेकिन 1900 की शुरुआत से तिब्बतीयों ने खुद पर शासन किया था. चीनी कम्युनिस्ट नेता माओ त्से-तुंग, एक बार फिर से तिब्बत पर नियंत्रण करना चाहते थे.

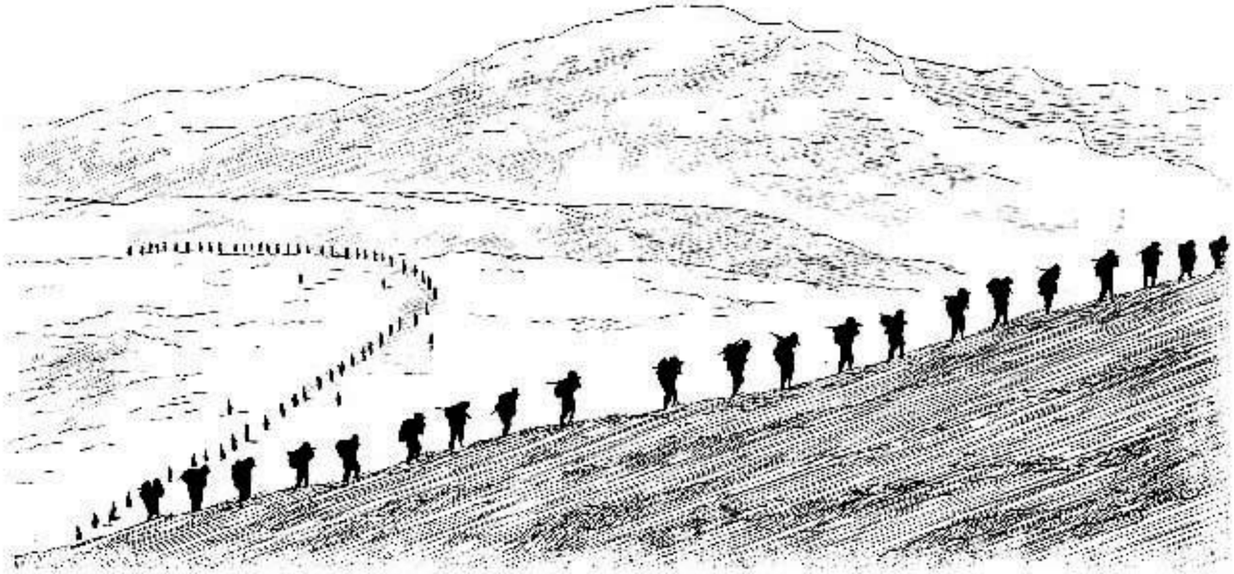
माओ त्से-तुंग (1893-1976)

माओ का जन्म 1893 में चीन के एक किसान परिवार में हुआ था. उन्हें सरकारी नियंत्रण वाली कम्युनिस्ट विचार पसंद थी और उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में मदद की थी.



1949 में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने सत्ता संभाली और माओ, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के अध्यक्ष बने. उनकी सरकार ने देश की भूमि, खेती और उद्योगों को अपने कब्जे में कर लिया. इससे चीन के लोगों के लिए भोजन की कमी हुई और बड़े पैमाने पर भुखमरी फ़ैली. माओ, चीन के सभी पुराने तौर-तरीकों को खत्म करना चाहते थे.





इसलिए उन्होंने पुस्तकों और कला के कार्यों को नष्ट करवाया. उन्होंने उन स्कूलों को बंद करवाया जो साम्यवादी विचारों का समर्थन नहीं करते थे. जो लोग उनसे सहमत नहीं थे उन्हें जेल में डाल दिया गया या मार डाला गया.

चीन के साम्यवादियों ने माओ को एक राष्ट्रीय नायक के रूप में देखा जिन्होंने चीन को और अधिक आधुनिक बनने में मदद की. लेकिन अन्य लोगों ने उन्हें एक भयानक तानाशाह के रूप में देखा जो लाखों चीनी नागरिकों की मौत के लिए जिम्मेदार थे.

चीनी और तिब्बतियों की बहुत अलग संस्कृतियाँ थीं. वे समान भाषाएं नहीं बोलते या लिखते थे. कम्युनिस्ट चीनी तिब्बत के धर्म या परंपराओं को पसंद नहीं करते थे. वे चाहते थे कि तिब्बती अपने तरीके बदलें और वे भी कम्युनिस्ट बनें.

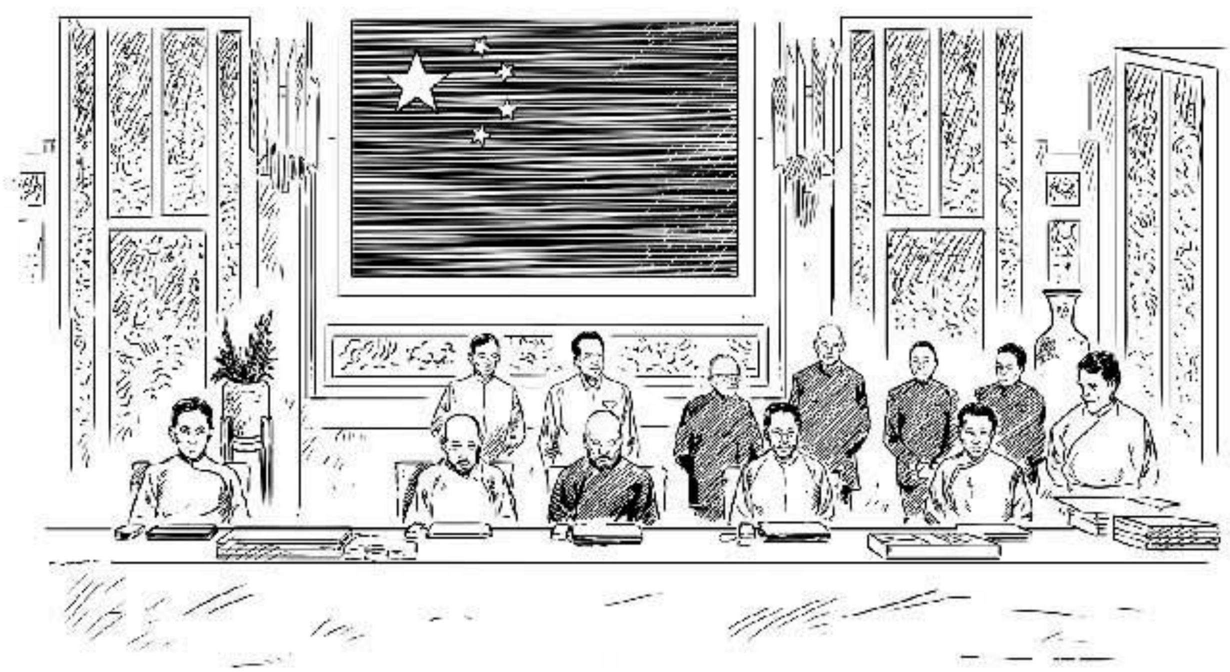
चीनी सरकार ने तिब्बत में सीमा पर सैनिकों को भेजा. इन सैन्य टुकड़ियों को पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) कहा जाता था. मुक्ति का अर्थ था स्वतंत्रता. चीनियों का मानना था कि वे तिब्बत को, उसके पुराने तौर-तरीकों से मुक्त कराने जा रहे थे.



लेकिन तिब्बती बदलना नहीं चाहते थे. उनका धर्म-बौद्ध धर्म उन्हें अहिंसा की शिक्षा देता था, जिसका अर्थ था कि अधिकांश तिब्बती लड़ाई में नहीं बल्कि शांति में विश्वास करते थे. कुछ तिब्बतियों ने हमलावर पीएलए के खिलाफ वापस लड़ने की कोशिश की. लेकिन तिब्बती सैनिक, चीन की सेना से कोई मुकाबला नहीं कर पाए. पीएलए, तिब्बत में घुसे और वे ल्हासा के करीब पहुँच गए.

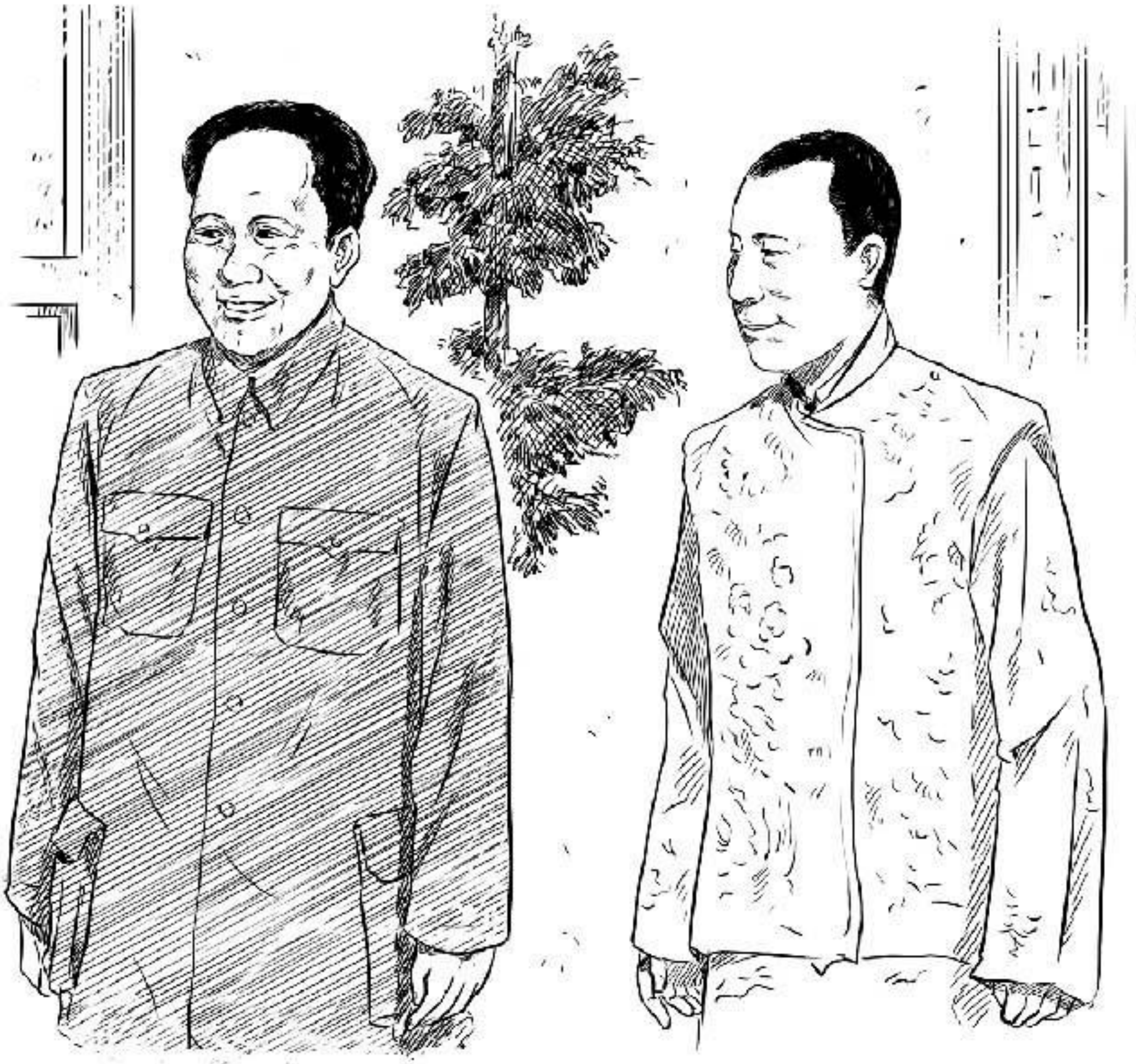
तिब्बत के सरकारी अधिकारी चिंतित थे. चीन के खिलाफ देश को एकजुट करने के लिए उन्हें एक मजबूत नेता की जरूरत थी. उन्होंने सोचा कि क्या दलाई लामा तिब्बत के राजनीतिक नेता के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार थे. दलाई लामा भी घबराए हुए थे. वो केवल पंद्रह वर्ष के थे. लेकिन बुद्धिमान धार्मिक नेताओं में से एक ने कहा, "उनका समय आ गया है." इसलिए 17 नवंबर, 1950 को किशोर लामा को तिब्बत का नेतृत्व करने की पूरी जिम्मेदारी सौंप दी गई.

छह महीने बाद चीनी सरकार ने, तिब्बती सरकार को यह कहते हुए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया कि तिब्बत, चीन का हिस्सा था. दस्तावेज़ में कहा गया कि चीन, तिब्बत को स्वयं-शासन की अनुमति देगा. दलाई लामा को उम्मीद थी कि वो समझौता उनके लोगों के खिलाफ पीएलए की हिंसा को रोक देगा.



तिब्बती नेताओं ने सत्रह सूत्री समझौते पर हस्ताक्षर किए

1954 में माओ त्से-तुंग ने दलाई लामा को चीन आमंत्रित किया. लगभग एक साल की यात्रा के दौरान, माओ और दलाई लामा ने सार्वजनिक और निजी बैठकें कीं. दलाई लामा विनम्र थे और सुनने को तैयार थे. माओ ने चीन को आधुनिक बनाने में मदद करने के लिए जो कुछ किया वो उससे भी प्रभावित हुए. लेकिन उन्होंने चीन के ग्रामीण इलाकों में लोगों की खराब जीवन स्थितियों को भी देखा. यात्रा के अंत में माओ ने कहा, "धर्म जहर होता है." उससे दलाई लामा डर गए. बौद्ध धर्म, तिब्बती संस्कृति का केंद्र था.



घर वापसी में दलाई लामा तिब्बती क्षेत्रों से गुज़रे. उसमें वो गाँव भी शामिल था जहाँ उनका जन्म हुआ था. उन्होंने देखा कि चीनी नियंत्रण में उनके अपने तिब्बती लोग कितने खराब तरीके से जी रहे थे. चीन, तिब्बत पर स्वशासन का अपना वादा नहीं निभा रहा था. पीएलए के सैनिक तिब्बत में और अंदर घुसते गए. उन्होंने लोगों से जमीन छीनी. उन्होंने मठों को तोड़ा. उन्होंने तिब्बतियों को, चीनी सेना में शामिल होने या नए निर्माण कार्यों पर काम करने के लिए मजबूर किया. वे बच्चों को कम्युनिस्ट स्कूलों में पढ़ने के लिए चीन ले गए. वे तिब्बत की संस्कृति और धर्म को पूरी तरह नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे.

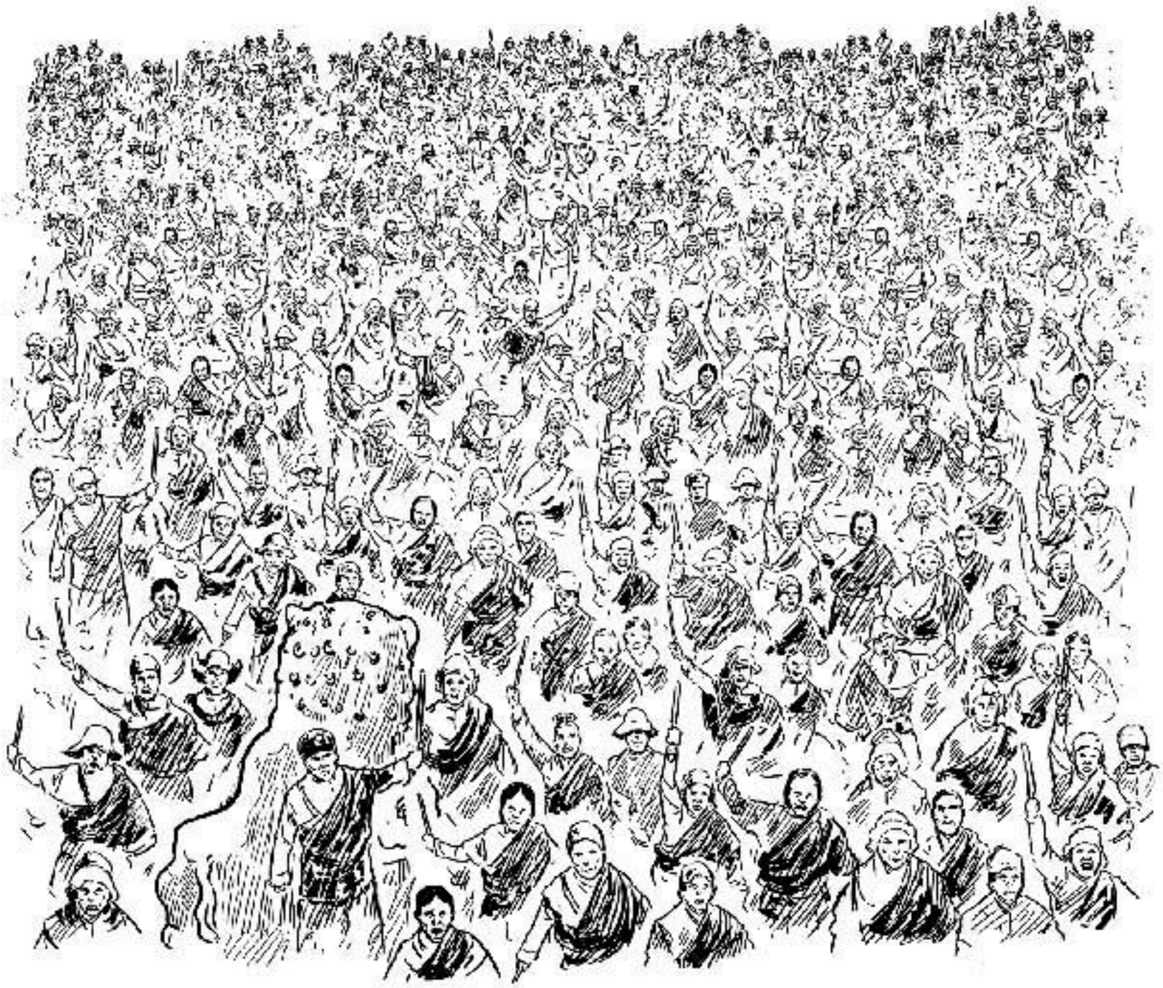


हालाँकि अधिकांश तिब्बती, शांतिपूर्ण लोग थे, फिर भी कई लोगों ने चीनियों से वापस लड़ना शुरू किया. उससे चीनी सैनिक और भी हिंसक हो गए. जमीन पर और घोड़े की पीठ पर चढ़कर लड़ाई के अलावा, चीनियों ने आकाश से पूर्वी क्षेत्रों पर बमबारी की. तिब्बती अपनी सुरक्षा के लिए ग्रामीण इलाकों से ल्हासा भाग गए. उससे राजधानी की आबादी बढ़ गई.



मार्च 1959 में, जब दलाई लामा तेईस वर्ष के थे, तब दो चीनी सैनिक ल्हासा के मंदिर में उनसे मिलने आए. उन्होंने दलाई लामा को 10 मार्च को चीनी सेना के मुख्यालय में एक कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया. उन्होंने दलाई लामा से कहा कि उन्हें वहाँ पर अकेले आना होगा. वो अपने साथ कोई तिब्बती सैनिक या अंगरक्षक नहीं ला सकते थे. दलाई लामा ने कार्यक्रम में जाने की योजना बनाई, लेकिन उनके कई सलाहकारों को वो एक चीनी साजिश लगी. अंगरक्षकों के बिना, दलाई लामा का अपहरण किया जा सकता था, या फिर उससे भी कुछ बुरा किया जा सकता था.

10 मार्च की सुबह दलाई लामा ने अपने महल के बाहर चिल्लाने की आवाज सुनी. तिब्बती लोगों ने नोरबुलिंगका को घेर लिया था. वे नहीं चाहते थे कि चीनी सेना उनके मुख्यालय के पास पहुंचे. उसकी रक्षा के लिए, वे लाठी, चाकू और चीनियों के खिलाफ इस्तेमाल की जा सकने वाली हर चीज अपने साथ लाए थे.



दलाई लामा ने प्रार्थना की. उन्होंने फैसला किया कि वो महल नहीं छोड़ेंगे. वो ल्हासा की गलियों में लड़ाई और खून-खराबा नहीं चाहते थे. आगे क्या होगा उन्हें इस बात की भी चिंता थी.

नोरबुलिंगका के आसपास तिब्बती भीड़ लगभग तीन लाख लोगों तक बढ़ गई, जिनमें बच्चे और भिक्षु भी शामिल थे, जो दलाई लामा के लिए लड़ने और मरने के लिए तैयार थे. चीनियों ने महल की ओर अपनी तोपों का मुंह फेर दिया. दोनों पक्ष युद्ध की तैयारी कर रहे थे.

दलाई लामा के सलाहकार उन्हें सुरक्षित रखना चाहते थे. यदि दलाई लामा मारे गए तो चीनी निश्चय ही तिब्बत पर अधिकार कर लेते. इसलिए, उन्होंने दलाई लामा से कहा कि अब उन्हें ल्हासा छोड़ना होगा. दलाई लामा की रक्षा करने का मतलब, तिब्बत के भविष्य की रक्षा करना था.

अध्याय 6

भारत भागो

17 मार्च, 1959 की सुबह सामान्य से कहीं अधिक शांत थी. मठों में घंटियाँ बजाने के बजाय, ल्हासा में तिब्बती लोग युद्ध की तैयारी कर रहे थे. उन्होंने दीवारों पर चीनी विरोधी पोस्टर लटकाए, अपनी खिड़कियां बंद कर लीं, और पूरे शहर में लोगों को हथियार बांट दिए. अपने नेता को बचाने के लिए भीड़ अभी भी नोरबुलिंगका महल को घेरे हुए थी.

दलाई लामा ल्हासा छोड़ने के बारे में अनिश्चित थे. उन्हें पता था कि यदि उन्होंने तिब्बत छोड़ दिया, तो फिर उन्हें कभी वापस आने की अनुमति नहीं मिलेगी. जब चीनियों ने नोरबुलिंगका की दीवारों पर बमबारी शुरू की, तो दलाई लामा को अंततः समझ में आया कि उनके लिए पलायन का वो सही समय था. उन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं से भरी एक पुस्तक पलटी. उन्होंने जो पृष्ठ पढ़ा वो साहस के बारे में था. उन्हें पता था कि आगे की यात्रा में उन्हें बहुत साहस की आवश्यकता होगी.



जब शाम हुई, तब दलाई लामा ने अपने भिक्षु वस्त्र उतारे और एक तिब्बती सैनिक के कपड़े पहने. उन्होंने महल में लोगों को अलविदा कहा, जिसमें पोपों भी शामिल थे, जो लगभग बीस साल पहले उनके पहली बार ल्हासा आने के बाद से उनके साथ थे.

देर शाम को, दलाई लामा और कुछ अन्य लोगों ने सैनिकों के कपड़े पहने और वे नोरबुलिंगका के एक द्वार से निकले और भीड़ में से होते हुए आगे बढ़े. किसी ने भी उन्हें नहीं पहचाना. उन्होंने याक की खाल से बनी नावों में, कीचु नदी पार की. दूसरी तरफ, वे अपने समूह के बाकी लोगों से मिले, लगभग सौ लोग, जिनमें सरकारी अधिकारी, उनकी माँ और उनके परिवार के अन्य सदस्य भी शामिल थे.



वे बिना रुके जितनी तेजी से संभव हुआ उतनी तेजी से घोड़ों पर सवार होकर दौड़ पड़े. हवा ठंडी और धूल भरी थी. सुबह होते-होते वे चे-ला पर्वत दर्रे पर पहुँच गए. खड़ी ढलान के शीर्ष पर. वहां से दलाई लामा ने आखिरी बार ल्हासा को देखा.



दलाई लामा का समूह तिब्बत की दक्षिणी सीमा से भारत की ओर जा रहा था. भारत के प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने अतीत में तिब्बत का समर्थन नहीं किया था. लेकिन क्योंकि अब हालात बहुत गंभीर थे इसलिए वो मदद करने के लिए तैयार हो सकते थे. दलाई लामा को उम्मीद थी कि भारत उनके लिए और उनके साथ भागने वाले सभी लोगों के लिए एक सुरक्षित घर होगा.

जवाहरलाल नेहरू (1889-1964)

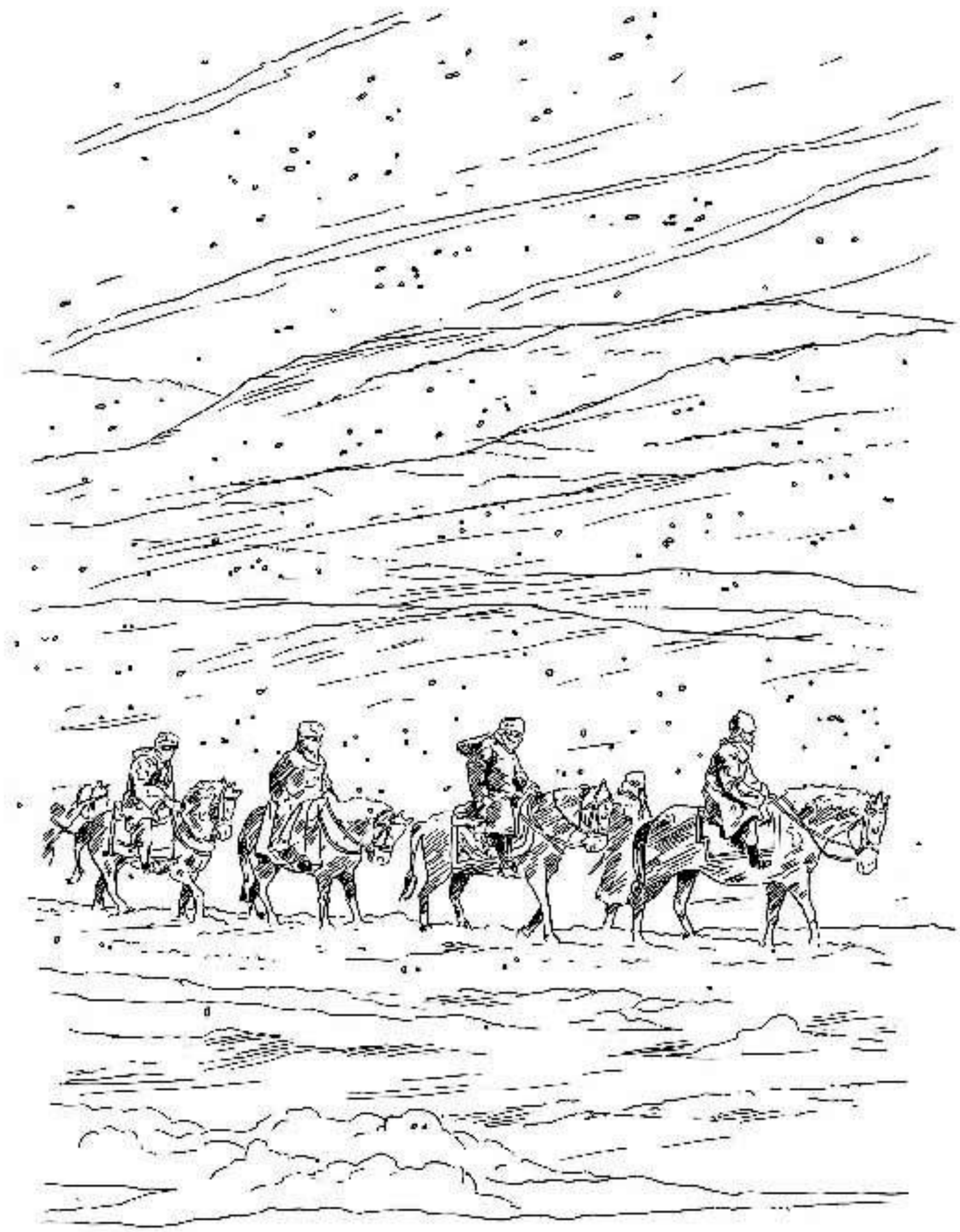


जवाहरलाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद, भारत में हुआ था.

उन्होंने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने में मदद करने के लिए महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया. 1947 में, भारत स्वतंत्र हुआ, और नेहरू को उसका पहला प्रधान मंत्री नामित किया गया.

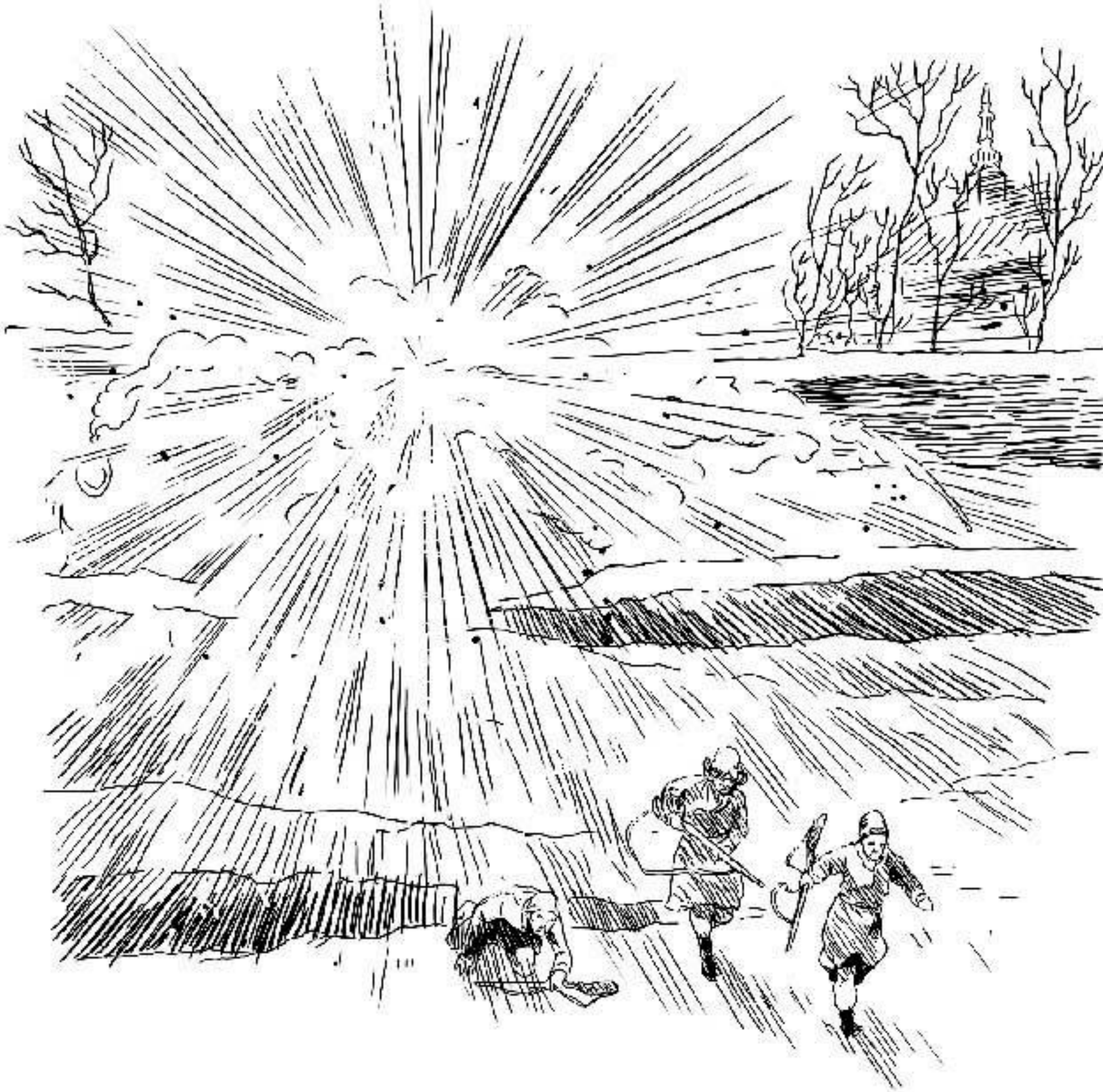
प्रधान मंत्री के रूप में, उन्होंने लोगों को उनकी सरकार में आवाज़ देने, गरीबों की मदद करने और सभी भारतीयों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए काम किया.

रास्ते में कई बाधाओं के कारण यात्रा में दो सप्ताह लग गया. तिब्बतियों को बड़ी सांगपो नदी और ऊंचे पहाड़ी दर्रों को पार करना पड़ा. घोड़े ताजी बर्फ़, फिसलन वाली बर्फ़ और गीली मिट्टी में से होकर गुज़रे. मौसम अक्सर तेज धूप से लेकर बर्फीले तूफान, बारिश की बौछारों से लेकर धूल भरी आंधियों तक में बदल जाता था. ठंड के कारण पुरुषों की मूंछें जम गईं थीं. उन्हें शीतदंश यानि फ्रॉस्ट-बाइट हो गया. उन्हें जंगली भेड़ियों और भालुओं की भी चिंता थी. और उन्हें हमेशा यह डर भी लगा रहता था कि कहीं चीनी उनका पता न लगा लें.



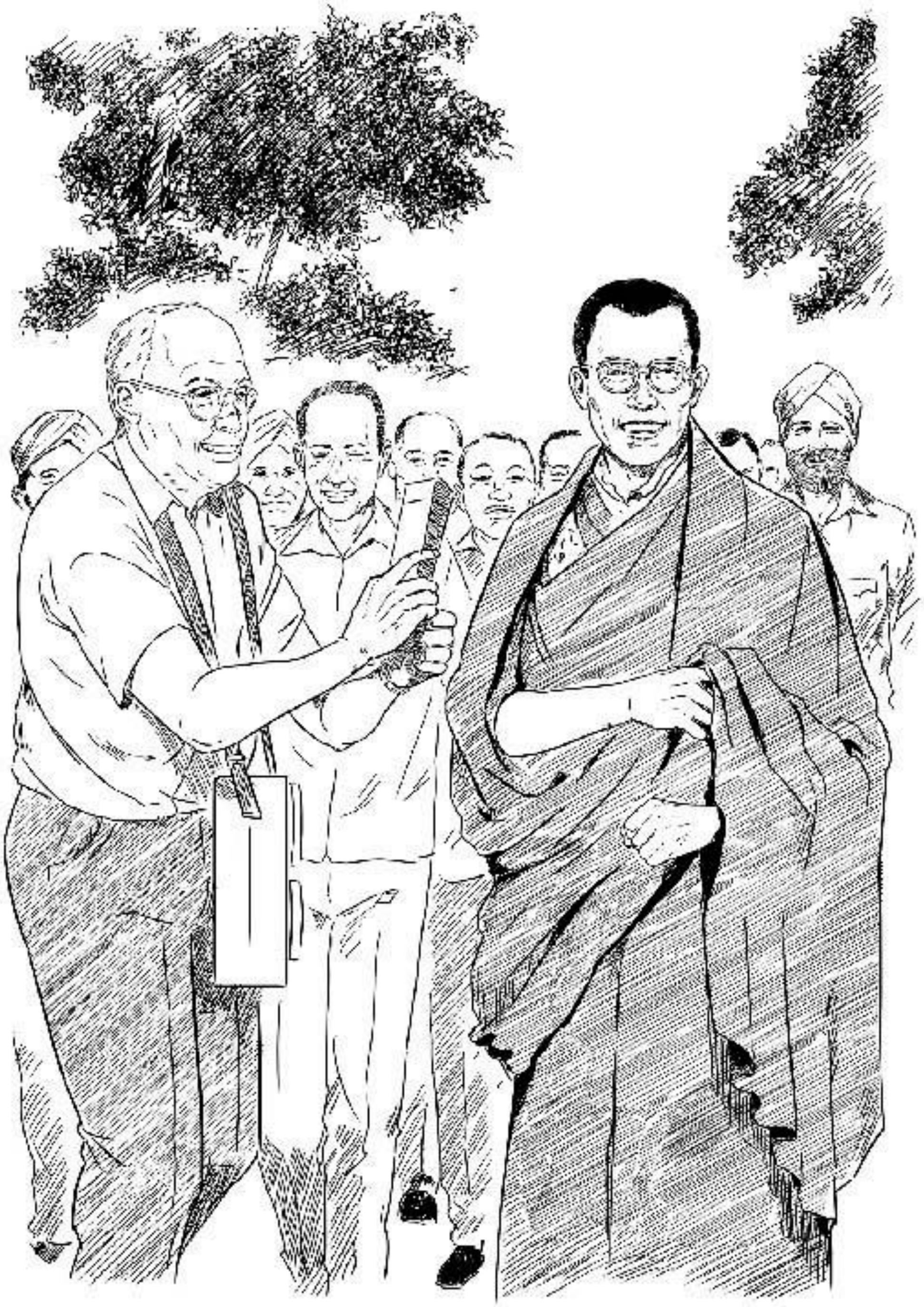
दलाई लामा की रक्षा के लिए दक्षिण-पूर्वी तिब्बत के सैकड़ों सशस्त्र योद्धा उस समूह के साथ सवार हुए. तिब्बती किसानों और भिक्षुओं ने उन्हें रास्ते में अपने घरों और मठों में आराम करने दिया. उन्होंने उन्हें भोजन, वस्त्र और नए घोड़े दिए.

यात्रा के दौरान दलाई लामा ने ल्हासा शहर से एक बुरी खबर सुनी. उनके जाने के बाद, चीनी और तिब्बतियों के बीच तीन दिनों तक लड़ाई चलती रही. गोलियों की तड़तड़ाहट, मौत और उदासी ने ल्हासा की सड़कों को भर दिया. लगभग छियासी हजार तिब्बती मारे गए थे. चीनियों ने नोरबुलिंगका महल और मठों पर बमबारी की. अब ल्हासा पर चीनियों का कब्ज़ा था.



जैसे ही वे भारत पहुंचे, समूह का आकार तिगुना - लगभग 350 लोगों का हो गया था. 31 मार्च, 1959 को सीमा पर भारतीय गार्डों ने उनका स्वागत किया. दलाई लामा को तेज बुखार था. वो बड़ी मुश्किल से अपने घोड़े पर बैठ पा रहे थे. लेकिन वो आखिरकार भारत पहुँच गए थे. और प्रधानमंत्री नेहरू तिब्बतियों की मदद करने को तैयार थे. भारत देश उनकी रक्षा करेगा.

नाटकीय पलायन से पहले, बाकी दुनिया के लोग तिब्बत के बारे में बहुत कम जानते थे. देश के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और प्राचीन परम्पराओं ने तिब्बत को बाहरी दुनिया से अलग रखा था. लेकिन अब तिब्बती शरणार्थियों के बारे में बात फैल गई थी. (शरणार्थी वे लोग होते हैं जिन्हें युद्ध या अन्य खतरों से बचने के लिए अपना वतन छोड़ना पड़ता है.) तेजपुर, भारत में एक विशाल स्वागत उनका इंतजार कर रहा था.



दुनिया भर के अखबारों के करीब दो सौ पत्रकार वहां जमा हुए थे. वे तिब्बत के बारे में जानने और उसके तेईस वर्षीय नेता से मिलने के लिए उत्सुक थे.

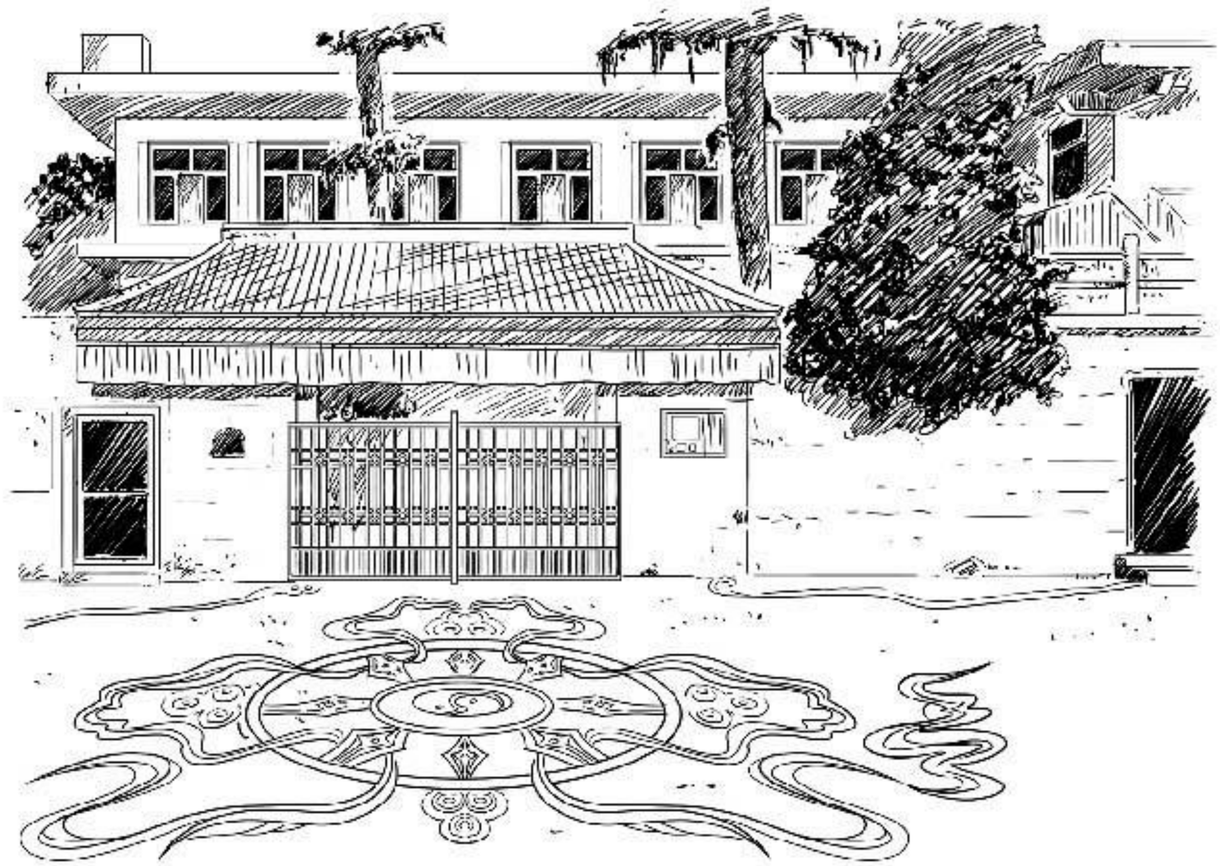
प्रधान मंत्री नेहरू ने दलाई लामा और उनके लोगों को उत्तरी भारत के धर्मशाला के कोहरे वाले पहाड़ी शहर में बसने की अनुमति दी. दलाई लामा को वो शहर सुंदर लगा. उन्होंने उससे अधिक पेड़ और बारिश किसी और शहर में नहीं देखी थी!



भारत आने के बारे में उन्होंने कहा, "मैं खुश और दुखी दोनों था." भारत ने उन्हें रहने के लिए एक सुरक्षित जगह प्रदान की थी. लेकिन दलाई लामा अपने पीछे बहुत से लोगों को छोड़ आए थे जिसका उन्हें दुःख था.

अध्याय 7

शांति की आशा



दलाई लामा और उनके लोग अब निर्वासन में रह रहे थे, जिसका अर्थ था कि उन्हें अपना वतन छोड़ने को मजबूर होना पड़ा था और अब वे अपने घर वापस नहीं जा सकते थे. भारत में उनका नया घर तिब्बत के महलों से बहुत छोटा था. उनके पास अब सैकड़ों नौकर, सलाहकार और भिक्षु भी नहीं थे. अब उन्हें पालकी में नहीं ले जाया जाता था. अब वो अपने लोगों के बीच चलकर जाते थे. दलाई लामा को अपने महल में होने वाले फैंसी समारोहों की याद नहीं आती थी. बौद्ध भिक्षुओं से एक साधारण जीवन जीने की अपेक्षा की जाती थी, और अब उन्होंने बिल्कुल वैसा ही किया.



उन्हें तिब्बत के बाहर की दुनिया से और अधिक जुड़े होने की भी खुशी थी. अब भारत में सुरक्षित रूप से, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र (यूएन) - एक अंतरराष्ट्रीय समूह जो शांति और मानवाधिकारों के लिए काम करता है - से तिब्बती लोगों को चीन से बचाने में मदद करने के लिए कहा. मानवाधिकार सभी लोगों का अधिकार होते हैं—चाहे वे किसी भी देश के हों, वे किसी भी धर्म का पालन करते हों, या उनकी त्वचा का रंग कुछ भी हो उनके साथ समानता, सुरक्षा, निष्पक्षता और स्वतंत्रता का व्यवहार होना चाहिए. संयुक्त राष्ट्र ने तिब्बतियों के समर्थन में अपनी आवाज उठाई और चीनी सरकार से तिब्बती लोगों के मानवाधिकारों का सम्मान करने को कहा.

निर्वासन में दलाई लामा के पहले वर्ष के दौरान, लगभग अस्सी हज़ार तिब्बती भारत भागकर आए और उनके साथ शामिल हो गए. तिब्बती लोगों के नेता के रूप में, दलाई लामा ने एक निर्वासित सरकार की स्थापना की. सरकार बौद्ध विचारों और लोकतांत्रिक विचारों, दोनों पर आधारित थी - लोग जो चाहते उसे कहने की आज़ादी, लोग जो चाहते उस पर विश्वास करने की आज़ादी और समूहों को एक-साथ मिलने की आज़ादी.



दलाई लामा उन तिब्बती परंपराओं की भी रक्षा करना चाहते थे जिन्हें चीनियों ने नष्ट करने की कोशिश की थी. इसलिए, उनके आने के तुरंत बाद, उन्होंने एक स्कूल की स्थापना की जहाँ छात्र तिब्बती नृत्य और संगीत सीख सकते थे और एक विश्वविद्यालय जहाँ वे बौद्ध शिक्षाओं का अध्ययन कर सकते थे.

जब दलाई लामा भारत में एक "नए" तिब्बत की स्थापना कर रहे थे, तो पीछे रह गए लोगों के लिए तिब्बत में चीजें और भी बदतर हो गईं. माओ त्से-तुंग ने सभी पुराने तिब्बती विचारों और रीति-रिवाजों से छुटकारा पाना अपना लक्ष्य बना लिया. तिब्बती लोगों को अपने पहनावे और यहां तक कि अपनी भाषा को भी बदलना पड़ा! बहुत से लोग मारे गए. कई मठों को तोड़ दिया गया, और पवित्र ग्रंथों और कलाकृतिओं को नष्ट कर दिया गया. तिब्बत का पर्यावरण भी नष्ट हुआ. जंगल काटे गए और जमीन प्रदूषित हुई.



अगले दशकों में, दलाई लामा एक युवा नेता के रूप में अपने निर्वासित राष्ट्र के लिए एक मजबूत आवाज के रूप में उभरे. उन्होंने भारत में कई स्थानों का दौरा किया और तिब्बत के बारे में बात की. उन्होंने भारत से एशिया के अन्य बौद्ध देशों में प्रचार करने के लिए खुद को काफी सुरक्षित महसूस किया. 1973 में, उन्होंने इटली, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रिया सहित यूरोपीय देशों का दौरा किया. 1979 में पहली बार उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा का दौरा भी किया. उन्होंने तिब्बतियों के साथ हुए अनुचित व्यवहार के बारे में दुनिया को बताया.



परम पावन दलाई लामा ने पोप पॉल VI का अभिवादन किया

सितंबर 1976 में जब माओ त्से-तुंग की मृत्यु हुई, तो दलाई लामा को उम्मीद की एक किरण दिखाई दी. बारिश हो रही थी, लेकिन जब बारिश रुकी तो उन्हें एक इंद्रधनुष दिखाई दिया. "मैं निश्चित था कि वो एक अच्छा शगुन होगा," इकतालीस वर्षीय दलाई लामा ने कहा.

और, निश्चित रूप से, चीनियों ने दलाई लामा को तिब्बत वापस आमंत्रित दिया! लेकिन वे तिब्बत को, चीन से आजादी नहीं देंगे. चीनी, तिब्बती लोगों पर नियंत्रण रखना चाहते थे. इसलिए दलाई लामा ने वापिस लौटने से इनकार कर दिया. उन्होंने महसूस किया कि वे भारत में रहकर तिब्बत के लिए कुछ और अधिक कर सकते थे. वे चीनी नियंत्रण से मुक्त रहकर तिब्बत की परंपराओं को सुरक्षित और मजबूत रख सकते थे.



दलाई लामा ने यूरोपीय संसद में अपनी पांच सूत्री शांति योजना प्रस्तुत की

1980 के दशक के अंत तक, तिब्बत में तिब्बती लोग, चीनियों से फिर नाराज हो गए. वे चीनियों से वापस लड़ने लगे. ल्हासा एक बार फिर से युद्ध क्षेत्र बन गया, ठीक वैसे ही जैसे तीस साल पहले दलाई लामा के भागने पर हुआ था. लड़ाई एक वर्ष से अधिक समय तक चली.

दलाई लामा चीनियों के साथ दुबारा लड़ाई नहीं चाहते थे. इसलिए उन्होंने यात्रा की, शांति के बारे में बात की और उम्मीद की कि बाकी दुनिया उनकी बात सुनेगी. उन्होंने कहा, "हमारा संघर्ष अहिंसक और नफरत से मुक्त रहना चाहिए." 1987 और 1988 में, उन्होंने विदेशी सरकारों के साथ अपनी शांति योजना साझा करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप का दौरा किया. इस योजना ने घोषणा की कि तिब्बत को शांति और अहिंसा का क्षेत्र होना चाहिए. वो चाहते थे कि चीनी अपने सैनिकों को वापस बुला लें. दलाई लामा अपने लोगों के अधिकारों की रक्षा करना चाहते थे. वो चाहते थे कि तिब्बत के प्राकृतिक पर्यावरण की भी रक्षा हो. दलाई लामा, चीनी नेताओं के साथ तिब्बत के भविष्य के बारे में बातचीत शुरू करना चाहते थे. उन्होंने प्रस्ताव दिया कि तिब्बत चीन का एक प्रांत बना रहे, लेकिन तिब्बत स्वयं शासन करे और उसे अपनी संस्कृति और धर्म को सुरक्षित रखने की अनुमति मिले. वो एक ऐसा समझौता चाहते थे जिसे उन्होंने "मध्य मार्ग" बुलाया - एक ऐसा समझौता जो तिब्बत और चीन दोनों के हित में हो.



लेकिन चीन सुनने को तैयार नहीं था. चीन को दलाई लामा की योजना में कोई दिलचस्पी नहीं थी. लेकिन नोबेल शांति पुरस्कार समिति की, उसमें बहुत रुचि थी. 1989 में, उन्होंने परम पावन दलाई लामा को अंतर्राष्ट्रीय नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया. तिब्बत के लोगों और अपनी मातृभूमि के प्रति उनकी करुणा के कारण समिति ने दलाई लामा को इस पुरस्कार से सम्मानित किया. चीनी सरकार के खिलाफ लड़ने के बजाय, उन्होंने शांतिपूर्ण समाधान तलाशने का विकल्प चुना था.



नोबेल पुरस्कार

अल्फ्रेड नोबेल (1833-1896) एक धनी स्वीडिश आविष्कारक थे. जब उनकी मृत्यु हुई, तो उन्होंने दुनिया में बदलाव लाने वाले लोगों को हर साल दिए जाने वाले पुरस्कारों के लिए पैसे दिए. नोबेल पुरस्कार की पाँच श्रेणियां थीं: भौतिकी, रसायन विज्ञान, शरीर विज्ञान या चिकित्सा, साहित्य और शांति.



नोबल मेडल

नोबेल के निर्देशों के अनुसार, शांति पुरस्कार हर साल उस व्यक्ति को दिया जाता है जिसने राष्ट्रों के बीच एकता बनाने की कोशिश की हो, सेनाओं की संख्या को कम करा हो और लोगों को शांति से एक-साथ आने में मदद की हो.

नोबेल पुरस्कार पहली बार 1901 में दिए गए थे और अभी भी हर साल दिए जाते हैं.

अध्याय 8

विश्व प्रसिद्ध हस्ती

नोबेल शांति पुरस्कार जीतने से दलाई लामा पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो गए. अब हर कोई उनसे मिलना चाहता था. पुरस्कार के बाद कुछ ही वर्षों में, उन्होंने चालीस से अधिक देशों की यात्रा की. उन्होंने सरकारी अधिकारियों, धार्मिक नेताओं, प्रोफेसरों और पत्रकारों से मुलाकातें कीं. पुरस्कार से उन्हें और अधिक लोगों के साथ शांति और करुणा के अपने संदेश को साझा करने का मौका मिला.



दलाई लामा और राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की मुलाकात

तीन मुख्य प्रतिबद्धताएँ

परम पावन, दलाई लामा, तीन मुख्य विचारों के बारे में बहुत दृढ़ता से महसूस करते थे और उनका पालन करने के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया. अपनी यात्राओं और भाषणों में, उन्होंने अन्य लोगों को भी वैसा ही करने के लिए प्रोत्साहित किया.



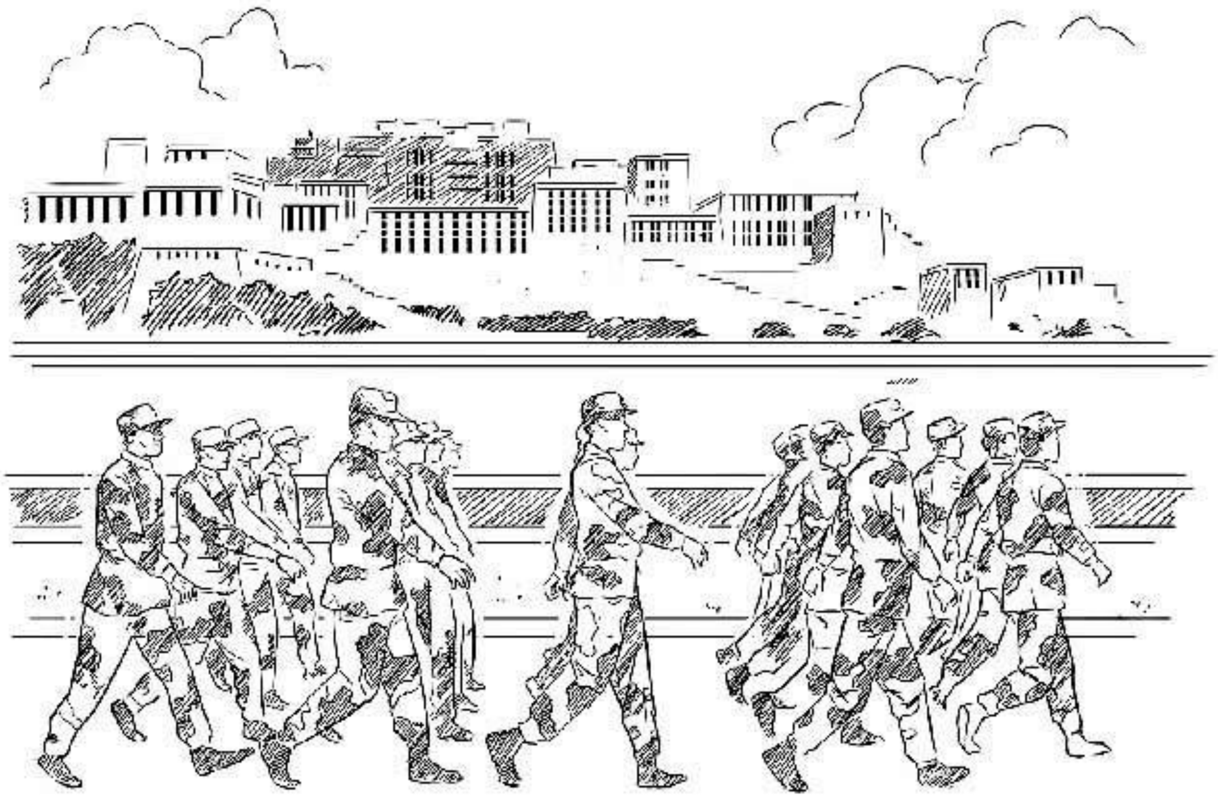
शांति का तिब्बती प्रतीक

उन्हें दलाई लामा की तीन मुख्य प्रतिबद्धताएँ कहा जाता है:

1. दलाई लामा का मानना है कि सभी मनुष्य एक जैसी चीजें ही चाहते हैं - कष्ट से मुक्ति पान और सुख प्राप्त करना. दलाई लामा चाहते हैं कि लोग दयालु, समझदार और क्षमाशील बनें.

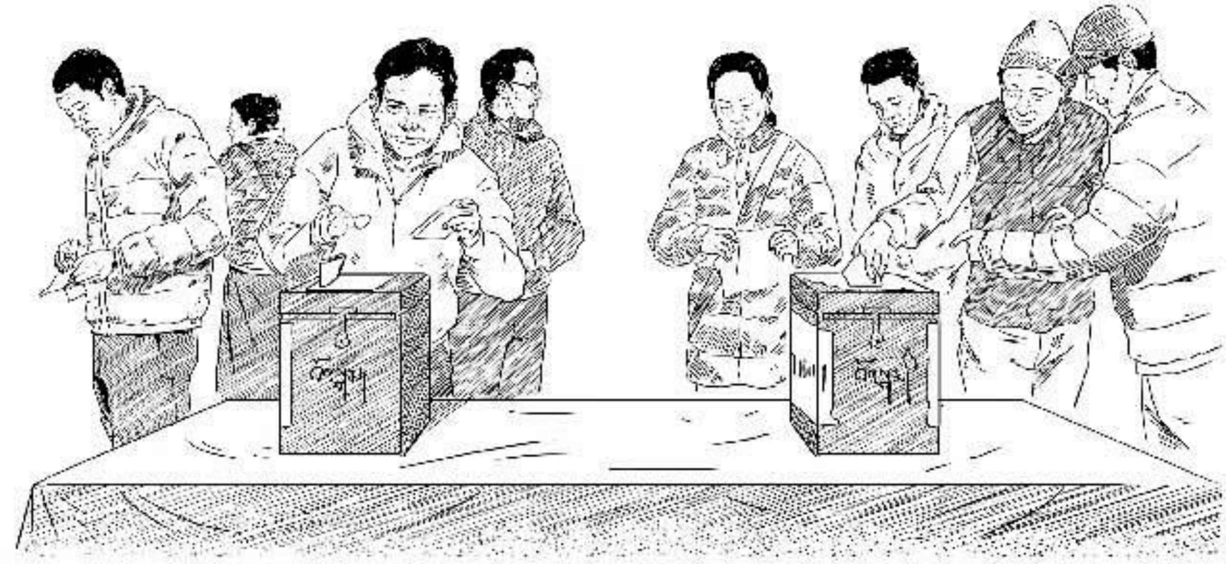
2. उनका मानना है कि विभिन्न धर्मों के लोगों को एक-दूसरे की मान्यताओं और परंपराओं का सम्मान करना चाहिए और शांतिपूर्वक एक-दूसरे के साथ काम करना चाहिए.

3. वो तिब्बती बौद्ध धर्म के पाठों और उसके शांति और अहिंसा के संदेश की रक्षा करने में विश्वास करते हैं.

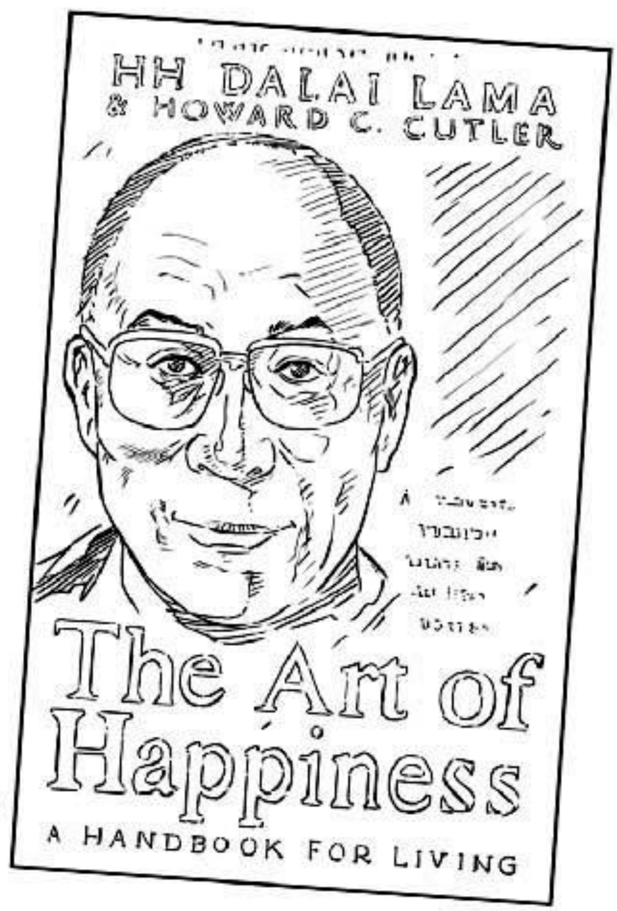


जब उन्होंने अपना संदेश पूरी दुनिया में फैलाया, तब भी तिब्बत के लोग पीड़ित थे. चीनी सरकार ने तिब्बतियों के जीवन के हर हिस्से को नियंत्रित किया. चीनी शासक, तिब्बत की संस्कृति, भाषा और धर्म को मिटाते रहे. अगर किसी तिब्बती के पास दलाई लामा की तस्वीर मिलती तो उसे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया जाता. सरकार के खिलाफ कोई नहीं बोल सकता था. धीरे-धीरे अधिक चीनी अप्रवासियों ने तिब्बत में प्रवेश किया, जिससे उनकी जनसंख्या, तिब्बतियों से अधिक हो गई. अब अधिकांश तिब्बती, खुदको तिब्बत के बाहर अधिक सुरक्षित महसूस करने लगे. दलाई लामा अभी भी चीन के साथ समझौता करना चाहते थे. लेकिन चीनी सरकार उसके लिए राजी नहीं थी.

जैसे-जैसे साल बीतते गए, कुछ तिब्बती लोग भारत छोड़ने लगे. निर्वासित तिब्बती, विश्व के सभी भागों में फैल गए. तिब्बती सरकार, जो खुद को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन कहती थी, ने 2001 में अपना पहला लोकतांत्रिक चुनाव कराया, जिसमें दुनिया भर के तिब्बती लोगों ने अपने अधिकारियों का चुनाव किया.

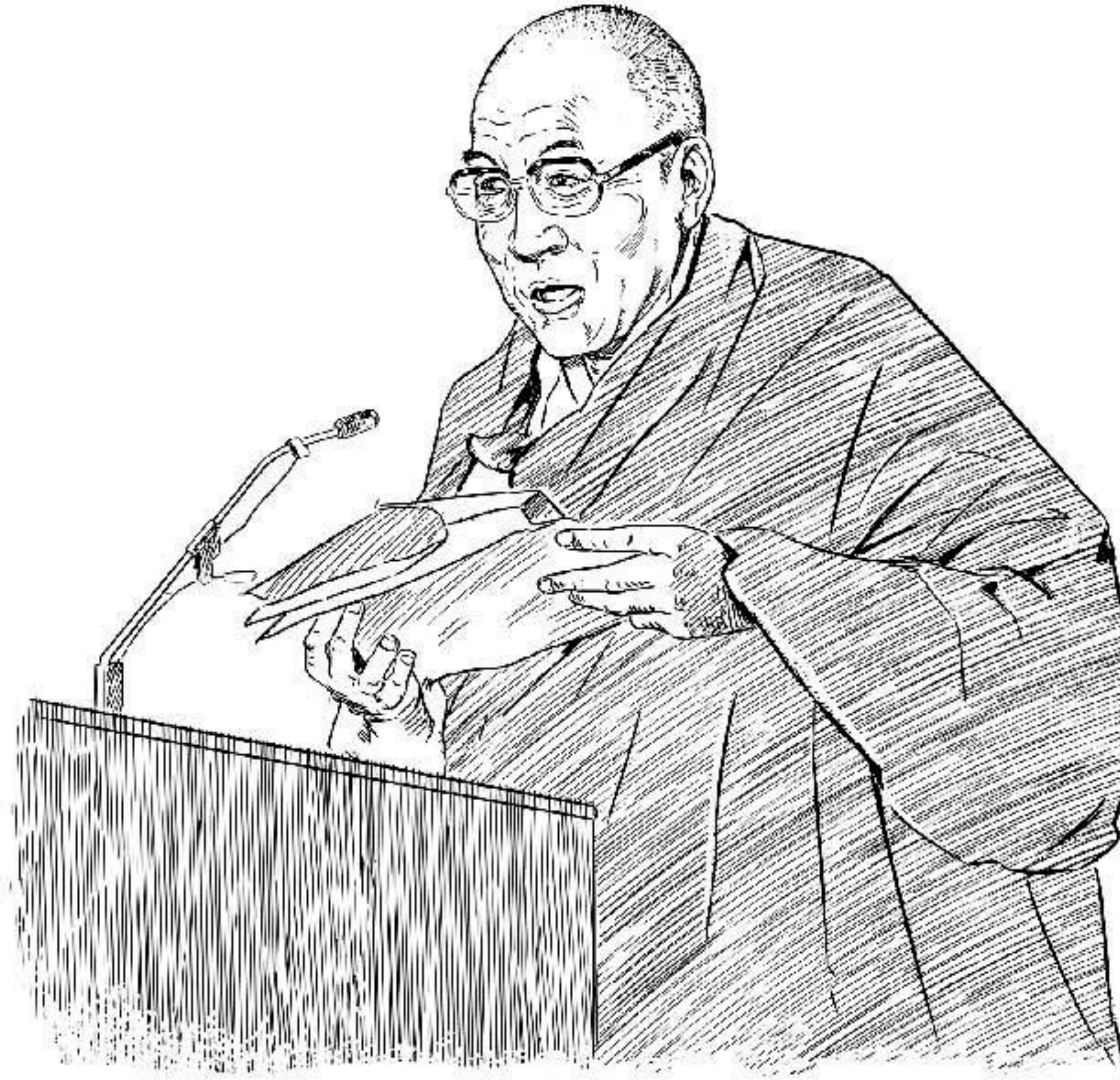


उनके "देश" की कोई विशिष्ट सीमा नहीं थी, लेकिन इसमें तिब्बतियों की वो आबादी शामिल थी जो अभी भी अपनी मातृभूमि में विश्वास करते थे, चाहे वे कहीं भी रहते हों.



दलाई लामा ने सौ से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, तीस से अधिक देशों से पुरस्कार जीते हैं, और सैकड़ों हजारों लोगों के साथ प्रार्थना सभायें आयोजित की हैं. वो खुशी पाने के लिए अंदर की ओर तो देखते ही हैं लेकिन दुनिया भर में दूसरों की मदद करने के लिए वो बाहर की दुनिया को भी देखते हैं.

2011 में दलाई लामा ने एक घोषणा की. वो 350 साल से अधिक पुरानी परंपरा को समाप्त करते हुए तिब्बत के राजनीतिक नेता के रूप में अपना पद छोड़ रहे थे. वो अभी भी तिब्बत के आध्यात्मिक नेता बने रहेंगे, लेकिन उन्होंने महसूस किया कि किसी देश में सभी राजनीतिक शक्ति रखने वाले एक व्यक्ति का समय अब खत्म हो चुका था. उसके बजाए, उन्होंने महसूस किया कि दुनिया के कई अन्य देशों की तरह तिब्बत को भी एक लोकतंत्र बनना चाहिए. तिब्बत का नेतृत्व केंद्रीय तिब्बती प्रशासन करेगा, जिसमें जनता द्वारा चुने गए नेता होंगे.



दलाई लामा ने यह भी कहा कि उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं था कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी आत्मा किसी नए शरीर में पुनर्जन्म लेगी. जब वे नब्बे वर्ष के हो जाएंगे, तो वे धार्मिक नेताओं और तिब्बतियों के साथ एक बैठक करेंगे और यह तय करेंगे कि उन्हें तिब्बत वापस लौटना चाहिए या नहीं. वे अगले युवा तिब्बती नेता के चयन के लिए और उसकी आत्मा की पहचान करने के लिए खोज दलों के लिए स्पष्ट निर्देश भी छोड़कर जाएंगे.

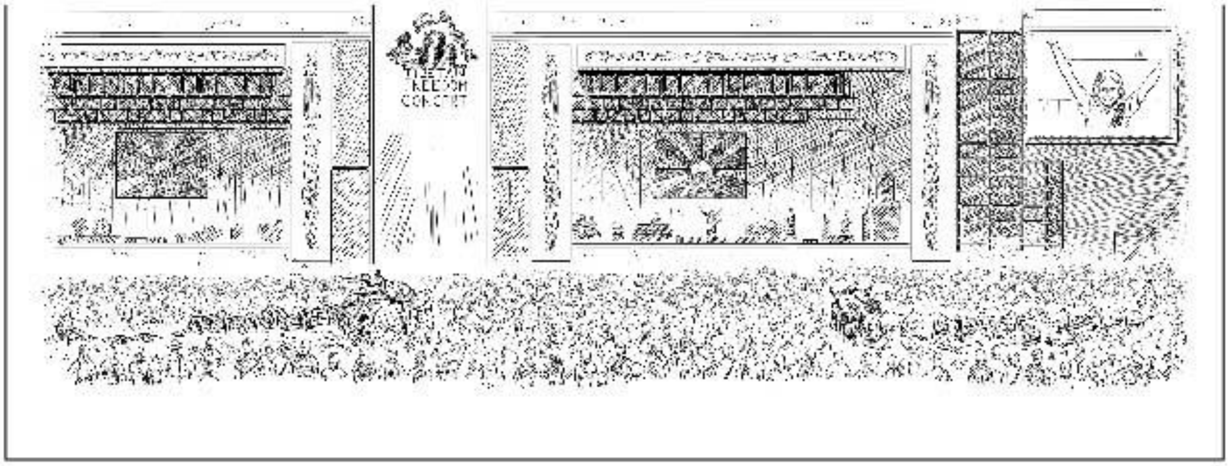
वैसे दलाई लामा अब 88 वर्ष के हैं, फिर भी उनमें बहुत ऊर्जा है और वे अपनी यात्रायें जारी रखते हैं. जब वो अपने घर धर्मशाला, भारत में होते हैं, तो वो सुबह तीन बजे उठते हैं और हर रात को सात बजे सो जाते हैं. वो प्रतिदिन छह घंटे से अधिक प्रार्थना और ध्यान में बिताते हैं.



तिब्बत में अधिकांश तिब्बतियों को वो समय याद नहीं है जब दलाई लामा उनके बीच रहते थे, लेकिन वे फिर भी हमेशा दलाई लामा के बारे में सोचते हैं. वे लगातार दुनिया को वहां हो रहे संघर्षों की याद दिलाते हैं. वे निर्वासन में तिब्बती संस्कृति को जीवित रखने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं.



दलाई लामा कहते हैं: "हम सभी मानव हैं, हम सभी सात अरब हैं. इस मायने में, हम सभी एक सौ-प्रतिशत समान हैं." उनका मानना है कि उससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग किस देश में रहते हैं, वे कौन सी भाषा बोलते हैं, उनके पास कितना पैसा है, या वे किस धर्म का पालन करते हैं - वे सभी इंसान हैं. हमें एक दूसरे के प्रति दया की भावना रखना चाहिए. उनके अनुसार करुणा का मतलब दयालु और कोमल होना है, लेकिन करुणा शक्तिशाली भी होती है. उनका मानना है कि करुणा सिर्फ उन लोगों के लिए नहीं होनी चाहिए है जिन्हें हम प्यार करते हों, बल्कि अपने दुश्मनों के लिए भी हमें करुणा होनी चाहिए. यहां तक कि दलाई लामा, चीनी लोगों को भी अपना "बहन-भाई" बुलाते हैं.



तिब्बती स्वतंत्रता समारोह

दुनिया भर के लोगों ने दलाई लामा को अपना संदेश फैलाने में मदद की है. और कुछ बहुत प्रसिद्ध संगीतकारों ने तिब्बती स्वतंत्रता समारोह में भाग लिया है.

1996 में सैन फ्रांसिस्को के गोल्डन गेट पार्क में पहले स्वतंत्रता संगीत कार्यक्रम में एक लाख लोग एकत्रित हुए. "बीस्टी बॉयज़" और "रेड हॉट चिली पेपर्स" बैंड के प्रदर्शनों के बीच, प्रशंसकों ने निर्वासित तिब्बतियों और अन्य विशेषज्ञों को सुना और यह समझा कि तिब्बत की कहानी को जानना इतना महत्वपूर्ण क्यों था.



तब से, दुनिया भर के कई शहरों में संगीत कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं. उन्होंने निर्वासित तिब्बती समुदाय का समर्थन करने के लिए लाखों डॉलर जुटाए हैं. और उन्होंने कई युवाओं को मानवाधिकारों के लिए खड़े होने के लिए प्रोत्साहित भी किया है

दलाई लामा एक ऐसे देश के चंचल बच्चे थे, जिसके ऊँचे, बर्फ से ढके पहाड़ों और शांतिपूर्ण जीवन शैली ने, उसे बाकी दुनिया से अलग रखा था. एक बार जब उन्हें दलाई लामा के पुनर्जन्म के रूप में खोजा गया, तो फिर वे एक ऐसे नेता बने, जिन्होंने अपने देश की उसके सबसे कठिन समय में मदद की. तिब्बती लोगों ने उनकी तब भी पूजा की जब उन्हें ज़िंदा रहने के लिए अपने देश से भागना पड़ा. अब दलाई लामा दुनिया भर में एक सेलिब्रिटी बन गए हैं.

दलाई लामा के सौम्य, मिलनसार और दयालु व्यवहार के कारण लोग उनकी प्रशंसा करते हैं. विभिन्न धार्मिक नेता उनका समर्थन करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि सभी को, चाहे उनका धर्म कुछ भी हो, एक-दूसरे के मानवाधिकारों की रक्षा के लिए मिलकर काम करना चाहिए. इतनी शोहरत के बावजूद वो हमेशा विनम्र रहते हैं. वो बार-बार कहते हैं, "मैं कोई विशेष व्यक्ति नहीं हूँ."

लेकिन वो वाकई में बहुत खास हैं. वे उन तिब्बतियों के लिए विशेष हैं जिनकी रक्षा के लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया है. वे सभी लोगों के लिए करुणा के आदर्श हैं. और वो आज भी उतने ही मिलनसार और जिज्ञासु हैं जितने वो बचपन में थे. "मैं अक्सर हंसता हूं," वे कहते हैं. वो दुनिया भर के लोगों में आशा और शांति के अपने संदेशों को फैलाने के लिए अपने हंसमुख व्यक्तित्व का उपयोग करते हैं.



दलाई लामा के जीवन की समयरेखा

1935 - ल्हामो थोंडुप का जन्म 6 जुलाई को तख्तसेर गांव, अमदो प्रांत, तिब्बत के एक कृषक परिवार में हुआ

1937 - चौदहवें दलाई लामा की खोज पार्टी ने ल्हामो के घर का दौरा किया

1939 - ल्हामो और उनका परिवार तिब्बत की राजधानी ल्हासा की तीन महीने की यात्रा के बाद 8 अक्टूबर को वहां पहुंचे

1940 - ल्हामो को 22 फरवरी को पोटाला पैलेस में दलाई लामा के रूप में विराजमान किया गया

1950 - चीनी सेना ले तिब्बत में प्रवेश के बाद दलाई लामा ने 17 नवंबर को पूरी राजनीतिक सत्ता संभाली

1954-1955 - चीन के नेता माओ त्से-तुंग के साथ शांति वार्ता के लिए चीन का दौरा किया

1959 - 17 मार्च की रात को ल्हासा से पलायन किया और 31 मार्च को भारत पहुंचे

1963 - निर्वासित तिब्बतियों के लिए एक अधिक लोकतांत्रिक सरकार के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार किया

1973 - पहली बार पश्चिमी यूरोप का दौरा किया

1987 - अमरीकी कांग्रेस को अपनी पांच सूत्री शांति योजना की घोषणा पेश करने के लिए अमेरिका, वाशिंगटन डीसी, गए

1989 - 10 दिसंबर को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित

2001 - तिब्बत के पहले लोकतांत्रिक चुनाव के बाद उन्होंने अपने कुछ शासकीय कर्तव्य त्याग दिए

2011 - तिब्बत के राजनीतिक नेता का पद छोड़ दिया और निर्वाचित नेताओं पर शासन का काम छोड़ दिया